शुद्धाशुद्धिपत्रम्

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ
न	नष्ट	भूमिका ३
सामर्थ	सामर्थ्य	५
कपतार	करतार	८
मेट	भेट	६
द्वितीय पक्षमें पड़वापौषकों-	पौष एकादशी द्वितीय पक्षमें	१२
सुदी १	सुदी ११	१२
तापे	ताये	१४
नाहीं	नहीं	१६
संभवनाथ	श्री संभवनाथ	१७
बाल द्व कर जोड़ी	बाल कर जोरी	१८
।बराजे	बिराजे	२३
सुदी ९	सुदी ६	२३
देवन सब मिल महिमा	देवन मिल महिमा	२८
प्रजा	प्रजार	३२
तीन लोक में छायो आनंद	लोक तीन में छयो अनंद	३४
आतशय	अतिशय	३४
में विराज	विराज	३४
जां	जा	३९
जव	जल	४०
घसि	घसी	४१
भले	भेल	४२
किये, किये	कियो, कियो	४२
ग्यारस वदि बैसाख को-	ग्यारस अंधियारी पौपको	४२
बैसाख	पौष	४२

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	पंक्ति
वैसाख	पौष	४३	१६
जानव	जानत से	४४	१३
द्रढ़ पित	द्रढ़रथपित	५१	१२
चाह है	हैं चाह	५३	६
अष्ट मम	मम कर्म अष्ट	५३	९
जाते कहे	जात कहे	५५	१०
हरो नाथ	नाथ हरो	५८	१३
भासो	भाषो	६०	८
१५	मावस	६०	९
भालछचे	मालछेय	६१	८
तुम	यह	६६	१७
पुष्पादिक	पुष्प आदि	९२	११
दीप धूप	दीपक धूपक	९२	११
फलआदिक	फलादि	९२	१२
एक कर लीने	कर एक भेल	९२	१२
चरनन धर दीने	लिये चरन मेल	९२	१३
लाल	लील	९९	२
धरी रग	धरी चरण	१०२	१६
पोर पोर	पौर पौर	१०८	३
दोर दोर	दौर दौर	१०८	१२
सं पे	सौंपे	११४	१३
घत्तानंद	घत्ता छंद	११६	६
छन्द	छप्पै	१२२	१०
देरो	देरी	१३१	७
२४६६	२४६५	१३६	१

श्रीजिनायेनमः

श्री वर्तमान जिन

चतुर्विंशतिपूजाविधान

रचयिता व प्रकाशक—

बालाप्रसाद् जैन कानूगो

रामगढ़, स्टेट अलवर।

प्रथमवार	वीर जयन्ती	मूल्य
५००	वीरनिर्वाणाब्द २४६५	सप्रेम भेंट

मिलने का पता—

बालाप्रसाद जैन आफिस कानूगो

निजामत थानागाजी, अलवर स्टेट।

पूज्य जैनाचार्यों ने श्रावक के दैनिक षट् कर्मों में देव पूजा को प्रथम स्थान दिया है यथाः—

देव पूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय संयम स्तपः।
दानं चैव गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने दिने॥

देव पूजा की महिमा से जैन ग्रन्थ पूर्ण हैं और मनसा वाचा कर्मणा करने वाले महानुभावों ने जो आत्म कल्याण किया है उसका उल्लेख भी विस्तार के साथ वर्णित है मनुष्य ही नहीं वरन् तोता और मण्डूक द्वारा भक्ति से की गई देव पूजा अष्ट कर्मों को न करने का कारण और साधन हुई है।

वर्तमान समय में जब ग्रहस्थ को धर्म के अन्य अङ्ग पालन करना कठिन है, देव पूजा ही एक सुलभ साधन है। जो ऐहिक सुखों को दिलाती हुई अन्त में अविनाशी परम पद प्राप्त कराती है।

सच्चे प्रेम से भगवान की अष्ट द्रव्य द्वारा अर्चन-पूजन पूजक के चित्त की समस्त कुत्सित वासनाओं को समूल नाश कर हृदय को देव मन्दिर बना देती है, जिसमें वह अपने इष्ट देव की स्थापना करने में सामर्थ्यशाली होता है और आत्मा में वह बल प्राप्त करती है जो अष्ट कर्मों के नाश करने में पूरा सहायक होता है।

ऐसे पुनीत देव पूजा के पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होकर ला० बालाप्रसादजी रामगढ़ निवासी ने वर्तमान श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर देव की यह प्रस्तुत पूजन निर्माण कर अपनी अपूर्व देव—भक्ति का पूर्ण परिचय दिया है जो श्लाघनीय है ।

जैन साहित्य देव पूजा के विधान से पूर्ण है और प्राचीन तथा अप्राचीन अनेक महान् कवियों ने प्राकृत संस्कृत और देव नागरी में भक्तिरस पूर्ण पूजनों की रचना की है । यह प्रस्तुत पूजन साहित्यिक सृष्टि में उनकी समानता करने में सर्वथा असमर्थ हैं । रचयिता भाई बालाप्रसाद व्याकरण और काव्यशास्त्र के पण्डित नहीं हैं अतः इसमें काव्य दोषों का होना संभव है ।

मैंने इस विधान को पढ़ा है । रचयिता ने अत्यन्त श्रद्धा और हार्दिक भक्ति द्वारा अपने इष्ट देव के गुणानुवाद का वर्णन करने में जो प्रयत्न किया है वह सफल हुआ है ।

रचयिता के हृदय में भगवान की प्रबल और प्रगाढ़ भक्ति है । भक्ति एक ऐसा आकर्षण है जो भक्त को अपनी पात्रता की परवा न करातीं हुई बलात् अपने प्रभु के गुणावली वर्णन में प्रेरित करती है । यथा श्री आचार्य मानतुङ्ग देव के शब्दों में—

वक्तुं गुणान गुण समुद्र ! शशाङ्क कान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या !
कल्पान्त काल पवनोद्धत नक्र चक्रं,
को वा तरीतुमल मम्बुनिधि भुजाभ्याम ॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं,
नाभ्येति किं निजशिशो परिपालनार्थं ॥

भक्ति वर्णन का जितना अधिकारी भक्त है उतना अन्य नहीं। भक्तकी वाणी को काव्य और व्याकरण के दोष दूषित करने में असमर्थ हैं। यह वह सुधा है जो सांसारिक रोगों को मिटाने की सामर्थ रखती है और अविनाशी सुखों को दिलाती है।

मुझे इसका विशेष हर्ष है कि भाई बालाप्रसाद ने इस विधान को मुद्रित कराके ५०० प्रति विना मूल्य जिनेंद्र भक्तों को भेट देने का निश्चय किया है अतः जिन स्थानों पर यह न पहुँच सके वहाँ के सज्जन डाक व्यय भेज कर रचयिता से मंगा सकते हैं।

अन्त में ला० बालाप्रसादजी को इस रचना पर बधाई भेट करता हूँ और अपने जैन बन्धुओं से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस विधान द्वारा भगवान की पूजन कर महान् पुन्य लाभ करें।

रामगढ } भवदीय—
स्टेट अलवर } रामजीलाल आमेश्वरी

नम्र प्रार्थना

यह प्रगट करना आवश्यक है कि प्रार्थी काव्य और छन्द शास्त्र से सर्वथा अनभिज्ञ है! ऐसी दशा में प्रस्तुत श्री चतुर्विंशति जिनदेव पूजन निर्माण करने का मेरा यह साहस सर्वथा अनुचित है परन्तु मेरे इष्ट देव की उत्कट भक्ति ने प्रेरित कर इस पूजन को दास से निर्माण कराया है इसमें जो काव्य दोष हों उनके लिए दास क्षमा चाहता है और अपने धर्म बन्धुओं से याचना करता है कि वह इस पाठ द्वारा भगवान की पूजन कर असीम पुण्य का सञ्चय करें।

विनीत—

बालाप्रसाद जैन

रामगढ़ (अलवर)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

चतुर्विंशति पूजा विधानं

—:(❀):—

दोहा—पाँचौं पद जिन नमन कर, जिनवाणी सिर नाय।
चतुर बीस जिनराज की, पूजा कहूँ बनाय॥

छंद—करम करदम लिप्त होकर, भूला आतम शुद्ध स्वभाव।
ज्ञान खो अज्ञान हूआ, चेत चेतन अब है दाव॥
देव पूजा सार जग में, कर जो चाहे कर्म अभाव।
भूलकर पछतायगा तू, जिम खिलारी भूले दाव॥
गह ध्यान मन जिन चित्त ला, कर दान पूजा हर्ष भाव।
जग्त तारन हैं जिनेश्वर, चार गती होवे अभाव॥
विघ्न नाशन शुभकरम को, इससे ना बढ़कर उपाव।
नाम मंगल सौ आठ पढ़, मेट कर आकुलता भाव॥

मंगलाचर्ण

॥ चौपाई ॥

जय जय सरब पूज्य सुखकारी, जय जय तीर्थंकर पदधारी।
जय जय जैनपाल दुखहारी, जैन ईशयति जैन उचारी॥
जैन पूज्य प्रभु दीनदयाला, दीनानाथ दीन प्रतिपाला।
जैन अंग जिनातम स्वामी, अक्षजीत भये शिवपुर गामी॥
काम, लोभ भय जीत तुम्हीं हो, रागद्वेष जित शत्रू तुम्हीं हो।
धर निरग्रंथ भेष बहु तारे, पूजत जगत नाथ पद थारे।
विश्वांगी रक्षक विश्व पाला, विश्वनाथ अरु

विश्वातम विश्व बंधु विख्याता, त्रिश्व पारगामी सुख दाता ॥
तुम हो अबंध भव बंधविडारा, जोगि पूज्य है नाम तिहारा ।
जोग अंग जोगवान जिनेशा, मुकत संग हो ज्ञान विशेषा ॥
योगीश्वर योगीन्द्र दयामय, जगतमान्य जग ज्येष्ठ पितामह ।
जगत श्रेष्ठ जग पिता जगतपति,जगतकांत जग वीर शुद्धमति ॥
जगत ध्येय चक्षु जग दरशी, जगत दात जग नाथ अदरशी ।
जय सर्वज्ञ सब लोक निहारी, सर्वेशं हर क्लेश दुखारी ॥
लोक ईश तुम हो जगनायक, लोकोत्तम अरु हो जगपालक ।
लोक ज्ञात सुख रूप अनन्ता,निरममन्त्र तुम गुण नहीं अन्ता ॥
निर अहंकार जगत चूड़ामणि,निराकार तुम जगत मनहरणि
पुण्यमूर्ति शांतिश्वर उत्तम, केवलेशप्रभु हो अति सूक्षम ॥
सूक्षमदरशी हो पुण्यातम, पुण्यशील मृत्युंजय जिनातम ।
चतुरमुखी प्रभु दरश तिहारा,श्रेय सकल जग नाम उचार ॥
मुकतीदायक हो मुकतेश्वर, अजित देह जिन सबके ईश्वर।
विष्णु ब्रह्मा काम बुध शंकर, चिदानन्द हो सब हितंकर।
जोतिस्वरूप तुम नाम धनंजय,सुगत महेश्वर मुनिमनरंजय ।
निरमय निरंजन अकर्ता जिनेश,सुखानन्द सुखमय प्रभु महेश
कलाधार हो राग रहिता, श्रीकंत गुण अनन्त सहिता ॥
श्रेष्ठ वेद करतार जिनेशा, अकलंक स्वयंभू जग परमेशा ।
नाम अनेक हैं नाथ तिहारे, मंगल कारण यह ही उचारे ॥
दोहा—वर्तमान चौबीस की, अरचा कारन शीश ।
धरूँ नाथ के चरण में, विघन विनाशो ईश ॥

श्रीचतुर्विंशति समुच्चय पूजा

* अडिल्ल *

ऋषभ आदि चौबीस सकल दुख भंज हो ।
वीतराग विज्ञान सकल मनरंज हो ॥
भव बन मांहि अनादि कर्म दुख देत हैं ।
ता कारण तुम चरण शरण हम लेत हैं ॥१॥

दोहा—श्रीजिनवरके चरणको, नमत सुरासुर राय ।
भव दुख टारन कारणे, मैं पूजत हूँ पाय ॥२

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

प्राशुक जल ले महाराज, झारी हेम भरी ।
मल करम नशावन काज, चरण प्रक्षाल करी ॥
चौबीसों श्रीजिनराज, भव दधि पार करो ।
निज पद दीजे शिवराज, भव आताप हरो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम् नि०

मलियागर अगर कपूर, कनक कटोरी में ।

तुम चरचे चरण हजूर, भाव भरो री मैं ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वं०

निरभय पद पावन काज, अक्षत ले पुञ्ज करूँ ।

भव तोड़ पास जिनराज, फेरन जनम धरूँ ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतम् निर्वपामीति०

अद्भुत पुष्पन सँहकार, भ्रमर गुञ्जार करैं ।

तुम चरनन धरे अगार, करम कलंक झरैं ॥

चौबीसों श्रीजिनराज, भवदधि पार करो ।

निज पद दीजे शिवराज, भव आताप हरो ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय० पुष्पम् निर्वपा०

मोदक फैनी घृतपिराज, परम स्वादिष्ट करे ।

मो क्षुधा निवारन काज, तुमरी भेट धरे ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय क्षुधारोग निवारणाय नैवेद्यम् निर्वपा०

कञ्चन दीपक ले हाथ, बाति कपूर धरी ।

छुड़ा मोहाँध का साथ, तुम पद अरज करी ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपा०

वसु विधिको नाशन देव, धूप दशांग लई ।

जर जाँय कर्म स्वयमेव, बहु आताप सही ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति०

बादाम लोंग फल साज, पिसता दाख सभी ।

फल मोक्ष मिले महाराज, अमूँ ना जन्त कभी ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताये फलम् निर्वपामीतिस्वा०

जल चन्दन अक्षत फूल, नेवज तासु मिला।
ले दीप धूप अनुकूल, मेल फल अर्घ बना ॥
चौबीसों श्रीजिनराज, भव दधि पार करो।
निज पद दीजे शिवराज, भव आताप हरो ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचौबीस जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा

जयमाल।

भव भँवर मांहिं अनादिसे मैं खूब गोते खा रहा। अवलम्ब देहि निवार स्वामी चरनमें सिर ना रहा ॥ मिथ्यातवश शुभ धर्म छाँडा भूल सुधि तुम पद गया। नाथ अब तुम शरण आया कीजिये मो पर दया ॥१॥ भावना ऐसी हो मेरी तप ब्रत संजम आदरूँ। कर्म के फन्दे से छुट कर ध्यान निज आत्म करूँ ॥ ज्ञानदीपक हो प्रकाशित तिमिरका नाशन करूँ। कामना मेरी हो पूरी जाय शिव रमणी वरूं ॥२॥ इस काज प्रभु तुम चरणकी मैं आनकर पूजा रची। रख

लाज आये शरणकी कियो नृत्य गायन जिम सची ॥ दीजिये वरदान स्वामी शरण तुम पद में गही । हों दूर दुख भव जाल के पाऊं अखै पद वेग ही ॥३॥ मैं दीन हूं दुख भोगता तुमसा सखी पाया नहीं । आपसा दानी जगतमें कोई नज़र आया नहीं ॥ "बाल" को भव जाल से कर पार विनती है यही । नाथ तुम बिन और कोई जगत तारन है नहीं ॥४॥

घता—चौवीस जिनन्दा आनँद कन्दा तार तार मैं शरण गही । भवदधि तारन पार उतारन तुम ही हो प्रभु और नहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री-चौबीस जिनेन्द्राय महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—वर्तमान चौबीस जिन जो नित पूजें आय ।
सो सब सुख इस लोकके भोगि शिवालय जाय ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री ऋषभनाथ पूजा ।

वृषभ चिह्न तुम चरण लखन सुरगति सुख पायो ।
भयो नाभि घर जन्म मात मरु गोद खिलायो ॥

[८]

कियो धरम उपदेश जैन को रहे सुनाई ।

भई जनहूं तुम सरस होत सब मन हुलसाई ॥

श्रीऋषभ जिनेश्वर जीव बहु तारे भवदधि पार

कर । प्रभु ग्यानी तिहीं को हृदय धरत है [illegible]

भाव भव ॥

मम काम वाण नशजाई, मैं पूजतहूं जिनराई ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय काम वाण विध्वंसनाय पुष्पम् ॥

उत्तम नैवेद्य बनाई, आदर से भेट चढाई ।

हो क्षुधारोग विघटाई, मैं पूजत हूं जिनराई ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् ।

प्रभु मोह महातम छाई, नाशनको दीप चढाई ।

दो ज्ञान भान प्रघटाई, मैं पूजत हूं जिनराई ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् ।

मैं धूप दशांग बनाई, नाशन विधि धूम्र उड़ाई ।

इन हो वश सुधि विसराई, मैं पूजत हूं जिनराई ।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् नि०

बादाम सुपारी लाई, करि भेट ध्यान चितलाई ।

मिले मोक्ष महासुखदाई, मैं पूजत हूं जिनराई ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि०

जल आदिक लिये मिलाई, थारी भर अर्घ बनाई ।

तुम चरनन भेट चढाई, मैं पूजत हूं जिनराई ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

दोहा—दोयज कृष्ण असाढकी, तिष्ठे गर्भ मझार ।

देवन आ उत्सव कियो, बरसे रतन अपार ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय आसाढ़ वदी२ गर्भकल्याणकाय अर्घम्

चैत वदी नौमी तिथि, जनमे श्रीभगवान ।
पुरी अयोध्या में भयो, घर घर मंगल गान ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय चैत वदी९ जन्म कल्याणकाय अर्घम्

कियो प्रतीत असार जग, माया मोह निवार ।
चढ़े सुदर्शन पालकी, तिथी जनम तप धार ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय चैतवदी ९ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम्

मोह ज्ञान दर्शन तजे, चौथा विधि अन्तराय ।
फागन कलि एकादशी, केवलज्ञान उपाय ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय फागन वदी११ केवलज्ञानप्राप्ताय अर्घम्

माघ कृष्ण चौदस दिवस, गिर कैलाश विराज ।
कर्म अघातिया नाशकर, पायो शिवपुर राज ॥
ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय माघवदी १४ मोक्षमंगलप्राप्ताय अर्घम्

जयमाला ।

पद्धड़ी छंद—श्रीआदिनाथ जिन धुरा धर्म । प्रघटायो जगमें मिटा भर्म ॥ थे प्रथम भव चक्री वज्रनाभि । पायो तीर्थेश्वर गोत्र लाभि ॥१॥ प्रभु चये सर्वारथ सिद्ध थान । माता मरुदेवी

गर्भ आन ॥ जनमे ले दस अतिशय जु साथ। त्रय ज्ञान सहित त्रैलोकनाथ ॥२॥ प्रभु भोग जगत निःसार जान । त्यागे तृणवत वैराग ठान ॥ साँझ समय वट तल विराज । कियो लोंच केश तारन जिहाज ॥३॥ उपज्यो केवल तव इन्द्र आय । रच समोसरण उत्सव कराय ॥ द्वादश कोठे रचिये विशाल । प्रथम गणधर मुनिगण दयाल ॥४॥ द्वितिय देवांगना कल्पवास । तृतिय अर्जिका गणनि पास । चौथे मनुष्य चकरेश आदि । पंचम स्त्री जोतिप देवनादि ॥५॥ छठवें देवी व्यंतरन जान । भवनवासिनी सप्तम प्रमान ॥ अष्टमसें वासी भवनदेव । नवमें व्यंतर आये स्वसेव ॥६॥ दसवेंमें ज्योतिपि देव राज। एकादश कल्पवासी विराज ॥ वैठे वारह कोठे तिर्यंच । धारी समता ना क्रोध रंच ॥७॥ तव खिरी अनक्षरी मुख जिनंद । निज भाप समझ पायो अनंद ॥ पद्मासन दिनके प्रथम पहर । हुवे सिद्ध "वाल" पर कर महर ॥८॥

घत्ता—श्रीआदिजिनेश्वर नमत सुरेश्वर दया करो हम शर्ण लही। बसु कर्म सतायो बहु दुख पायो करो आप सम अर्ज यही ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा—सुन हो आदि जिनेश, तारे बहु भवभँवरतें।
काटो जगत कलेश, या कारण पूजा रची ॥

इत्याशीर्वाद

श्री अजितनाथ पूजा।

❀ छप्पय ❀

श्रीअजितनाथ भये सिद्ध, कर्म हनि शुक्ल ध्यान धर। भयो पुरी अयोध्या जन्म, पित जितशत्रुराय घर ॥ विजयादेवी माय, चिन्ह गज चरण विराजत। बरसे रतन अपार, गर्भ दिन षट् मास रहे तब ॥ विजय विमान सुख भोग प्रभु, कियो वास मा गरभ में। हरि हर्षित हो मंगल किये, वरषत भयो सुख सरब में ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

कंचन झारी महा मनोहर, गंगा जल भर लायो ।
प्रभुपद पंकज करत प्रक्षालन, हर्ष हिये उपजायो ॥
जन्मजरामृत रोगनशावन, शरण चर्ण जिन आयो ।
करो आप सम शरण गहेको, अशरणशर्ण कहायो ॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम

चन्दन केशर कनक कटोरी, मँहकत अलि गुञ्जारे ।
श्रीजिनचरण चर्च निज करसे, हर्षित हिये अपारे ॥
ताप निवारो जगत भ्रमणको, शरण चर्ण० ॥२॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम्

बहुविधिउत्तमउज्वलशोभित, अक्षत चुगकर लायो ।
पुञ्ज मनोहर कर निज करसे, मस्तक चरण नवायो ।
अक्षयपदके हेत जगोत्तम, 'शरण चर्ण जि० ॥३॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् निर्वपा०

चम्पा बेला भेट करन को, हर्षित हाथ बढ़ायो ।
भक्तिभावसे पूज्य चरण जिन, मनुष्य जन्म फल
पायो । काम नशावन काज आजमें, शरण चर्ण० ॥४
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्व०

उत्तम मोदक घेवर फैणी, किरिया सहित बनाये ।

स्वर्ण थाल भर विनयवान हो, लाकर भेंट चढ़ाये ॥
क्षुधा सतायो बहु दुख पायो, शरणचर्ण जिन आयो।
करो आप सम शरण गहेको, अशरणशर्ण कहायो ॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् ॥
दीप रत्न का भाव हिये में, शक्ति इतनी नाहीं ।
भक्ति भाववश यह ही दीपक, मेल्यो चरनन माहीं ॥
मोह अंधका नाश करो अब, शरण चर्ण० ॥६॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् ॥
महासुगंधित धूप दशानन, कर्म खिपावन लायो ।
लगे अनादि टरैं ना टारे, मो मन अन्य न भायो ॥
अष्ट कर्म के जारन कारण, शरण चर्ण० ॥७॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपा०
ले नारंगी आम्र नारयल, पिश्ता लौंग सुपारी ।
अर्पण हैं यह गोला जामन, भर भर कंचन थारी ॥
चाखन चाहूं शिवफलस्वामी, शरण चर्ण जिन० ८
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामी०
जीवन चन्दन अक्षत उत्तम, पुष्पमिलाय धरे हैं ।
नैवेद्य अरु दीप धूप फल, आठों द्रव्य खरे हैं ॥
अजित प्रभुकी पूजा कारण, शरण चर्ण जि० ॥ ६
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् निर्वपा०

पंचकल्याणक

ज्येष्ठ कृष्णकी मावसके दिन, आये गर्भ मंझारी।
गर्भकल्याणक आकर कीना, इन्द्र अवधि विचारी॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय जेठ वदीमावस गर्भकल्याणकाय अर्घं
पक्ष उजारी माघ मासकी, दसमीं जननी जाये।
श्रीजिनवर पद शिला पाँडुपर, हरि प्रक्षाल कराये॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघ सुदी १० जन्मकल्याणकाय अर्घं
शम दम धारे माघ शुकलमें, नौमीं चढ़ सिद्धारथ।
कर्म खिपाये भावन भाये, कीना तप यथारथ॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघ सुदी ९ तपकल्याणकाय अर्घं॥
कर्म घातिया नाश जगोत्तम, केवल लब्धि पाई।
द्वितिय पक्षमें पड़वा पोषको, नृत्य कियो हरि आई॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय पौष सुदी १ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं
गिर सम्मेदा धर खड़गासन, ध्यान शुकल आराधा।
चैत पञ्चमी श्वेत रोहिणी, पायो पद निर्बाधा॥
ॐह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय चैत सुदी ५ मोक्षकल्याणकाय अर्घं

जयमाला

पद्धड़ी छंद—तुम अजितनाथ मैं हूं अनाथ।
लग्यो कर्म रिपु छोड़ै न साथ॥ प्रभु इस

कारण तुम शरण आय । मन बच तन कर पूजा रचाय ॥१॥ गावत हूं तुम गुण बार बार । भव सागर से दो तार तार ॥ गयो भूल धृक मैं निज स्वरूप । मिथ्यामतिमे गिरो नर्क कूप ॥२॥ थावर त्रस धर काया अनेक । जग भ्रमत भ्रमत छोड़ी न एक ॥ बार अठारा इक श्वांस मांहि । भयो जन्म मरण सन्देह नांहि ॥३॥ जो भयो देव मुरझाय माल । षट् मास सोच भयो अन्त काल ॥ तुम से छानी ना दुख जिनेश । प्रभु करो पार जग दुख विशेष ॥४॥ टारन कारण भव वास नाथ । तुम चरण शरण गहि नाय माथ ॥ विनवे "बाला" सुनिये जिनेश । मो मिले सेव चरणन हमेश ॥५॥

घत्ता—मुझ कर्म सतायो, शरणौ आयो, अरज "बाल" स्वीकार करो । वसु कर्म हनीजे, निज पद दीजे, मोक्ष महल का बास करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा-अजितनाथपद जो जन नमें, मोक्षनारवर होय।

चरण-शरण प्रभु मैं गही, निज पद दीजे मोय ॥

इत्याशीर्वादः

श्री संभवनाथ पूजा ।

❀ छप्पय ❀

श्रावस्ती पुरी जनम, पिता जयतार नृपति घर।
श्रीषेणा उर रहे, मास नव चय ग्रैवेयक ॥
धनुष चारसौ काय, वरण तापे सुवरण सम ।
सोलाकारण भाय, तीर्थंकर भए नशा तम ॥
प्रभु दोषअठारा त्यागके,बोधे बहु प्रभु जगतजन।
जायविराजे जगशिखरपर,पाय चतुष्टय करमहन॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधीकरणम ॥

अथाष्टक

प्राशुक जल झारीभरी,भवभञ्जनजी मनरञ्जनजी ।
कीने चरण प्रक्षाल, जय जिन मोक्ष मई ॥
जनमजरादुःख देरहे, भवभञ्जनजी मनरञ्जनजी
कर करुणा दो टाल, जय जिन मोक्ष मई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

चंदन घसों अतिचावसों, भवभंजनजी मनरंजनजी
लेपो चरण मझार, जय जिन मोक्ष मई ।
करूँ अरजअतिभावसों, भव भंजनजी मनरंजनजी
भव आताप निवार, जय जिन मोक्ष मई ॥२॥
ॐह्रीं श्रीसँभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग बिनाशनाय चन्दनम्
अक्षत लिये भर थारमें, भवभंजनजी मनरंजनजी
गज मोती उनहार, जय जिन मोक्ष मई ॥
करहुँ पुञ्ज सिरनायके, भवभंजनजी मनरंजनजी
प्रभु अक्षय पद दर्कार, जय जिन मोक्ष मई ॥३॥
ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् ।
बेला जूही केवड़ा, भव भंजन जी मन रंजनजी ।
मिलना कठिन अवार, जय जिन मोक्ष मई ॥
तन्दुल रंग चढ़ायके, भवभंजनजी मनरंजनजी ।
कीने पुष्प तयार, जय जिन मोक्ष मइ ॥४॥
ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् ।
मोदक घेवर सोहने, भव भंजनजी मनरंजनजी ।
धरे रकेबी मांहि, जय जिन मोक्ष मई ॥
क्षुधा मिटा मम दासकी, भवभंजनजी मनरंजनजी
मेले चरणन मांहि, जय जिन मोक्ष मई ॥५॥

ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्।

मोह महातम जोगसे, भव भंजनजी मन रंजनजी
धर चौरासी काय, जय जिन मोक्ष मई ॥
भरमण जग छूटानाहिं,भव भंजनजी मनरंजनजी
दीपक चरण चढ़ाय, जय जिन मोक्ष मई ॥६॥

ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम् ॥

जारत धूप सुहावनी, भवभंजनजी मन रंजनजी।
धर धूपायन मांहि, जय जिन मोक्ष मई ॥
टारन कारन करमको, भवभञ्जनजी मनरंजनजी
भव भव हैं दुःखदाय, जय जिन मोक्षमई ॥७

ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्।

गोला आदि फलादि ले,भवभंजनजी मनरंजनजी
चुग चुग लायो लौंग, जय जिन मोक्ष मई ॥
भेट करी बहु भक्ति से,भवभंजनजी मनरंजनजी।
करो मोक्ष संयोग, जयजिन मोक्ष मई ॥८॥

ॐह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् ॥

जलचंदनअक्षतचरुलिये,भवभंजनजी मनरंजनजी
दीप फूल फल धूप, जय जिन मोक्ष मई ॥
सबका अर्घ बनायके भव भंजनजी मनरंजनजी

करी भेट चिद्रूप, जय जिन मोक्ष मई ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घम् निर्वपा०

पंचकल्याणक

फागुन बदि अष्टमि शुभ जाना । बसे गर्भ जननी शुभ थाना ॥ देव कुवेर रत्न बरसाये । पूर्व मास षट् गर्भ रहाये ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय फागन बदी ८ गर्भकल्याणकाय अर्घं

भयो जन्म कातिक उजयारी । पूरणिमाँ हरि गान उचारी ॥ कियो नृत्य ता थेई थैय्या । इन्द्र भये को लाहो लैय्या ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय कातिकसुदी १५ जन्मकल्याणकाय अर्घं

मंगसिर सुदि पूनम तप धारे । शालि तरु तल केश उखारे ॥ चढ़ कमलाभा पहुँच अम्ब बन । कियो ध्यान आतम मन वच तन ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय मंगसिरसुदी १५ तपकल्याणकाय अर्घं

कातिक बदी चतुर्थी के दिन । पिछले पहर घाति करम हन ॥ केवल पाय शुद्ध कर आतम । अवलोके त्रिलोक मिटा तम ॥४॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ जिनेन्द्राय कातिकबदी ४ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं

चैत शुक्ल षष्टी गिर ऊपर । घात अघाति भये परमेश्वर ॥ सहस्त्र सिद्ध भये संग तिहारी । सर्व चरन जिन ढोक हमारी ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय चैत सुदी ६ मोक्ष कल्याणकाय अर्घं

जयमाला

संभव हम शरण तिहारी । ली कारण कर्म निवारी ॥ मेटो भव भव का फंदा । कर करुणा आप जिनंदा ॥१॥ भव वास कष्ट की खाना । अब तक ना तुम को जाना ॥ तुम विन ना कोई मेरा । हो ना अब जगत वसेरा ॥२॥ पंचमगति पदवी पाऊँ । स्वर्गन में नाहिं लुभाऊँ ॥ लहूं चर्ण शर्ण शिव माहीं । तहाँ लौट फेर है नाहीं ॥३॥ जे जे दुःख जीव सहंता । सब जानत श्री भगवंता ॥ केवल विन कहै सकै को । वस नर्क सहे दुःख में जो ॥४॥ अशर्णन शरण तुम्हीं हो । दीनों के नाथ तुम्हीं हो । तुम सम ना जग में दूजा । गही शरण चरण कर पूजा । विनवे "बाल" द्व कर जोरी ।'यह

अर्जे पास कर मोरी ॥५॥

घत्ता—त्रिभुवन के स्वामी, अंतरयामी, जन्म मरण दुख घोर सहे। बसु कर्म सतायो, शरणै आयो, नाश पाश जग चरन गहे ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—संभवनाथ जिनन्द पद,पूजत शीश नवाय।
ते भवि शिवपद को लहैं, जामन मरन नशाय॥

इत्याशीर्वाद

श्री अभिनन्दननाथ पूजा।

❀ कवित्त ❀

पूरब भव मनुष्य थे, महा बल भूप आप;
तज कर विजय विमान, गर्भ मात पायो है।
जननी शुभ स्वप्न देख, हरषित हो अंग माहिं;
स्वप्नन को हाल जाय,'पति पै द्रसायो है ॥
सुवीरपति कहत भए, धन्य भयो दिवस आज;
तीन लोक पूज्यनीक, गर्भ माहिं आयो है।
जनमे अयोध्या पुरी, गान नृत्य पार नाहिं;
पुरजन विलोकित छवि,शब्द जय सुनायो है ॥१

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतरसंवौषट्आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

प्रभुजी तारो ला सही, मेरी भव भव डूबो नय्या
प्रभुजी तारो ला सही ॥ टेक ॥

जल झारी प्राशुक लियोजी, क्षीरोदधि उनिहार ।
चरण पखाले आयकेजी तुम दधि तारनहार ॥
प्रभुजी तारोला सही ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलम्

चन्दन घसों अति भावसोंजी, कनक कटोरी लाय ।
चरच चरन लाहो लियोजी, भवदधि तरन उपाय ॥
प्रभुजी तारोला सही ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोगविनाशनायचन्दनम्

मोती सम शोभा दिपे जी, शुभ अक्षत जिनचंद ।
चुग चुग शिवपद कारणोजी, 'मेले चरन जिनन्द ॥
प्रभुजी तारोला सही ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् नि०

कामबाण बहु दुख दियेजी, भरमायो जग मांय ।

कारण काम नशावनेजी, दीने पहुप चढ़ाय ॥

प्रभुजो तारोला सही ॥४॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् ।

क्षुधा सतायो बहुदुखी जी, कारण रोग इलाज ।

नेवज थार संजोयके जी, करी भेट जिनराज ॥

प्रभुजी तारोला सही ॥५॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् ।

मिथ्या तिमिर नशायवेजी, शरण गही जिनराय ।

दीप ज्ञान परकाशको जी, धर्यो चरणमें आय ॥

प्रभुजी तारोला सही ॥६॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोहाँधकार विनाशनाय दीपम्

करम दुखी भव भव कियोजी, रहे साथ लिपटाय ।

जारन कारण इननके जी, दीनी धूप चढ़ाय ॥

प्रभुजी तारोला सही ॥७॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् ।

भिरमत जीव अनादिसे जी, चारों गति के मांय ।

फल उत्तम भेटूं प्रभुजी, शिवपुर वास कराय ॥

प्रभुजी तारोला सही ॥८॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् ॥

शुभ जल चन्दन महँकतेजी, अन्तत पहुप मनोग्य।
दीप धूप फल द्रव्यकोजो, कियो अरघतुम योग्य॥
प्रभुजी तारोला सही ॥६॥

ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

वैसाख शुकल षष्ठमि तिथीजी, आये गर्भ मंझार।
देवन मिल उत्सव कियोजी, वरसे रतन अपार॥

ॐह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय वैसाख सुदी ६ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

माह सुदी द्वादशि दिनाजी, जनमे श्री भगवान।
लोचनसहस्र इंद्र लखि मूरत, निरतत अति मुसकान

ॐह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय माह सुदी १२ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मतिथी को पुरी अयोध्या, लीनो तप तुम ठान।
छांडि परिग्रह भये दिगम्बर, राग द्वेष ना मान॥

ॐह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय माह सुदी १२ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभदिन पोष सुदी चौदस ने, उपज्यो केवलज्ञान।
लोकालोक समस्त निहारे, घाति कर्म किये हान॥

ॐह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय पौष सुदी १४ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भतिथि और नक्षत्र पुनर्वसु, तोड़ी जगत जंजीर।
जगत शिखर पर जाय विराजे, हरो दासकी पीर॥

ॐह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय बैसाख सुदी ९ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल

आयो शरण श्रीअभिनन्द चन्द । करो दूर जामन मरण फन्द ॥ तुम भूले पाये दुख अनन्त । जो ध्यावैं भविजन सुख लहन्त ॥१॥ मिथ्या तिमिर वश में हुआ अंध । बसु विधि ने फाँसा डार फंद ॥ तुम ऽनन्त चतुष्टय पाय नाथ। जा बसे मोक्ष तज कर्म साथ ॥२॥ हुए सिद्ध गुणन पा अठ महन्त । भए सर्व ईश कर चार अन्त ॥ मेरी अब प्रभु कीजे सहाय । बस पड़ा कर्म दुख रहा पाय॥३॥ चहुँ गति भिरमत ऽनंत काल । बीता जानत हो सर्व हाल ॥ जिनके कहवे की शक्ति नाँय । अब गही शर्णं तुम चर्णं आय ॥४॥ प्रभु तार तार कर सिंधु पार । चौ-गति के सारे दुख निवार ॥ धरूँ काय मैं अब

ना और । प्रभु अर्ज़ दास पर करो ग़ौर ॥ "बाल" विनय और चाह नांहि । मिले ठौर तुम शरण मांहि ॥५॥

घत्ता–दोउ कर जोरी, स्तुति तोरी, करत 'बाल' प्रभु चरनन में । जग दाह मिटावो, भ्रमण नशावो, जन्म धरूँ ना भव बन में ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा–करहु दया भगवान, दूर होय मल आतमा ।
प्रघटै आतम ज्ञान, बिना रोक शिवपुर बसूँ ॥

इत्याशीर्वादः

श्री सुमतिनाथ पूजा ।

❀ छप्पय ❀

सुमति हेत जिन सुमति, नाथ मैं शीश नमाऊँ ।
तुम प्रसाद अघ टरें, चार तज शिव पद पाऊँ ॥
सोला कारण भाय, लह्यो तीर्थंश्वर पद तुम ।
त्यागे अठ दश दोप, गहे गुण छियालिस उत्तम ॥
प्रभु तुम पद पावन हेत हम, पूजत पद अति चाव सों । आय विराजो मम हृदय में, उतरूँ

त्रय वर भावसों ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

जनम मृत्यु भय शोक बुढ़ापा, दुखदाई यह जी के।
इनको टार अखैः पद काज, प्रक्षाले पद नीके ॥
सुमतिदायक सुमति जिनेश्वर; क्षायक मूल करमके
इन्द्री विषयन लोलुप हो मैं, भूले राह धरमके ॥१

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

केशर चन्दन घसि निज करसे, मध्य कपूर मिलायो
श्रीजिनशरण गह मनबचतन, चरच चरण हर्षायो ॥
सुमतिदायक० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनायचन्दनम्

मरण सतायो शरणे आयो, अक्षत ले तुम आगे ।
पुञ्ज बनाये बहु गुण गाये, उदय भयो मम भागे ॥
सुमतिदायक० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मरवा वेला आदि अनोखे, चुग चुग पुष्प चढ़ाये।
काम दुष्ट ने पीछे पड़ कर, अद्भुत नाच नचाये ॥
सुमतिदायक० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् ।

रसना इन्द्री के वश होकर, भक्ष अभक्ष न जाना ।
तृप्त हुआ ना नाथ कभी मैं, क्षुधा रोग न माना ॥
सुमतिदायक० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् ॥

मोह अंधवश भव वन भटकत, वृथा समय गयो है।
अंध नशावन दीप हाथ ले, 'बाल' नजर कियो है ॥
सुमतिदायक० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् ॥

अष्टकरम दल घेर रहा है, मिथ्या मग भटकावत ।
नाशन काज शत्रु दल प्रभु में, धूप धूम उड़ावत ॥
सुमतिदायक० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपा०

केला सेव अनार नरंगी, उत्तम तुम ढिंग लायो ।
मिले मुक्त फल शरण अभङ्गी, कर्म नशावन आयो ॥
सुमतिदायक सुमतिजिनेश्वर, नायक मूल करम के।

इन्द्री विषयन लोलुप हो मैं, भूले राह धरमके ॥८

ॐह्रीं श्रीसु तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामी०

जल अर चंदन पुष्परु तंदुल, नैवेद्यं भर थारी ।

मेल संग में दीप धूप फल, अर्घ भेट सुखकारी ॥

सुमतिदायक०॥९॥

ॐह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घम् निर्वपा०

पंचकल्याणक

श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु की,

महिमा न जाय बखानी ॥ टेक ॥

छह मास गर्भमें बाकी, देवन मिल नगरी रचना की,

अगणित रतनन वर्षाकी, महिमा यह पुन्य प्रभा की,

श्रावण सुदि दोयज को श्रीजिन,

आये गर्भ गुण खानी ।

श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु०॥१॥

ॐह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण सुदी २ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमे ज्ञान त्रय ज्ञाता, पित मेघ मंगला माता,

पद चकवा चिन्ह विख्याता, दुख हर्ण जननि सुख-

दाता, चैत शुकल एकादशि दिन शुभ को,

स्तुति देव वखानी ।

श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु० ॥२॥

ॐह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र सुदी ११ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तृण सम त्यागे हस्ती दल, ले पीछी और कमंडल,
वन आम्र प्रियंगुतरु तल, धरो ध्यान प्रभु जी निश्चल,
वैशाख शुक्ल नौमी निशि बीते,
लौंच केश तैं ठानी ।
श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु० ॥३॥

ॐह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय वैसाख सुदी ९ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

कर घाति कर्म चउ डारे, ज्ञान के ढाकन हारे,
दोउ शुभ ध्यान चितारे, केवल त्रिलोक निहारे,
जन्म दिवस देवन सब मिल महिमा,
पञ्चम ज्ञान वखानी ।
श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु० ॥४॥

ॐह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र सुदी ११ केवलज्ञानप्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

शेष इक मास रहे पर, समोशरण तजा जिनवर,
प्रभु चढ़ सम्मेदगिर पर, ली मुक्त खडगासन धरकर,

चैत श्वेत एकादशि दिन शुभ को,
वरी प्रभु शिव नारी ।
श्री सुमतिनाथ जगईश प्रभु० ॥५॥

ॐह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र सुदी ११ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल

गुण वरणत मुनिगण हारे । फिर कहै कौन यश थारे ॥ वशभक्ति हो वचन उचारे । मैं "बाल" समुद्र गुण थारे ॥१॥ जग तारण तरण तुम्हीं हो । अशरण को शरण तुम्हीं हो ॥ तुम दीनन के दुःख हरता । जग को सुख साता करता ॥२॥ शरणा अब आन लियो है । करुणापति जान लियो है ॥ करुणा कर वेग उवारो । चउ गति का भ्रमण निवारो ॥३॥ गति चारों अति दुख दाई । तुम जानत श्री जिनराई ॥ तज निगोद नर्क में आयो । मिल नारक त्रास दिखायो ॥४॥ प्रभु तिर्यंच गति दुःख भारी । मारन ताडन भय कारी ॥ भया इष्टरु अनिष्ट संयोगा । गति मानुष

करमन जोगा ॥५॥ है देवन माँहि भुराई । लख अन्यन की प्रभुताई ॥ भयो भरमत काल अनन्ता । भव वास ना आयो अन्ता ॥६॥ चक्री पद लों नहिं चाहूं । हो अमर अखय पद पाऊं ॥ शिव थानकवास करावो । मम आवागमन मिटावो ॥७॥ प्रभु "वाल" नमैं कर जोरी । स्वीकार अरज कर मोरी ॥८॥

घत्ता—श्री सुमति जिनेशा, नमत सुरेशा, तार तार वहु वार भई । वसु कर्म सतायो भव भिरमायो, नाशन कारण शरण लई ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—सुमतप्रभु के पद कमल, जो पूजैं धर चित्त
नर सुर के सुख भोग शिव, पावैं अविचल नित्त ॥१

इत्याशीर्वादः

श्री पद्मप्रभु पूजा ।

छप्पय

दशअतिशय त्रयज्ञान, सहित जिन जनम लियो है ।
देवन कृत दश चार, शेष दश ज्ञान भयो है ॥

सूझे लोकालोक, खिरी जब गद-गद वाणी।
निज-निज भाषा मांहि, समझ लीनी सबप्राणी॥
पूजत हैं पद श्री पद्म हम, शीश धरणिमें टेककर।
आवो आवो प्रभु तिष्ठोतुम, दासनउर प्रभु महरकर।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधीकरणम्॥

अथाष्टक

रूपा झारी हाथ ले, प्राशुक जल भरि माह।
प्रक्षाले पद जिन पद्म के, जनम जरा नश जांहि॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलम्

चंदन झारी में भरयो, अगर कपूर मिलाय।
यजूँ चरण जिन पद्मके, ताप जगत मिट जाय॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्म नाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोगविनाशनायचन्दनम्॥

अक्षत लायो सुहावने, अति सुगंध अरु श्वेत।
यजूं चरण जिन पद्म के, अक्षय पद के हेत॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्म नाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् नि०

चम्पा चमेली मोगरा, लिपटत भँवरा श्याम।

लायो भेट जिन पद्म के, नाशन वैरी काम ॥ ४

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विनाशनाय पुष्पम् ।

मोदक आदिक सोहने, मेल रकेबी मांय ।

करहुँ भेट जिन पद्म की, क्षुधा नशावन आय ॥५

ॐ ह्रीं श्रीपद्म नाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

कंचन दीपक हस्त ले. बाति कपूर जलाय ।

सन्मुख धरि जिन पद्म के, नाशन तिमिर उपाय ॥६

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम

धूप दशानन मँहकती, धूपायन में डार ।

नमूं चरण जिन पद्म के, दीजे करम प्रजा ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् ।

श्रीफल लौंग इलायची, कदलीफल आनार ।

हैं अर्पण जिन पद्म के, मिलन मोक्ष फलकार ॥८

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् ॥

जल चन्दन अक्षत पहुप, नेवज दीपक धूप ।

फलादि सहित जिन पद्म के, वारूँ अर्घ अनूप ॥ ९

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

षष्टमि कृष्णा माघ को, तिष्ठे गर्भ मझार ।

देवी मिल जग मातकी, सेवा करी अपार ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय माघ बदी ६ गर्भ कल्याणकाय अर्घं ।

कातिक तेरस श्याम को, कौशांबी पुर नाथ ।

मात सुसीमा पितु धरण, कीयो ग्रह विख्यात ॥२

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय कातिक बदी १३ जन्मकल्याणकाय अर्घं

जन्म तिथी पर जनम में, लौंच प्रियंगु तल केश ।

तज कर सकल विभूति को, धरो दिगंबर भेष ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय कातिक बदी १३ तपकल्याणकाय अर्घं

चैत शुकल की पूर्णिमा, केवल ज्ञान उद्योत ।

जाने लोकालोक सब, ज्यों निशि दीपक जोत ॥४

ॐ ह्रीं पद्मनाथ जिनेन्द्राय चैत सुदी १५ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं

फागुण कारी चौथ को, शिखर समेद सिधार ।

शेष करम प्रभु दलन कर, भये मोक्ष भरतार ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मनाथजिनेन्द्राय फागन बदी ४ मोक्ष कल्याणकाय अर्घं.

जयमाला

श्री पद्मनाथ, पद पद्म चिन्न । लख पुद्गल आतम भिन्न भिन्न ॥ तुम जगत त्याग वैराग धार । तजि दुविध परिग्रह बीस चार ॥१॥ तुम सही परीषह बीस दोय । चारों से निर्ममत्व होय ॥ कर अष्ट

करम चकचूर चूर । इंद्रिय विषको कर दूर दूर ॥२॥ तुम मास षष्ट तप घोर ठान । धर्म शुकल शुभ धारे सुध्यान ॥ तव प्रकट भयो केवल जिनंद । तीन लोकमें छायो अनंद ॥३॥ प्रकटे तव आतशय तीस चार । दश आठ दोष जर से उखार ॥ भई समोशरण शोभा अनन्त । ताको वरणत ना लहो अन्त ॥४॥ अन्तरीक्ष ता मध में विराज । चहुँ दिश में भापत जगत ताज ॥ गिर सम्मेदा जा चढ़े शीश । भए जगत तज तुम मोक्ष ईश ॥ "बाल" नमत तुम युग चर्ण आज । ये जगत दाह मेटन इलाज ॥५॥

घत्ता—श्री पद्म जिनन्दा, आनन्द कन्दा, तीन भुवन में सार तुही । तुम सम ना दूजा, इम रच पूजा, तुम गुण पुष्पन माल गुही ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—पद्मप्रभु पद पद्मको, पूजें जो धरि चाव । सुख संपत नित नित लहें, अंत लहें निज भाव ॥

इत्याशीर्वादः

श्री सुपार्श्वनाथ पूजा ।

❀ कवित्त ❀

दीनपति दीनानाथ, कर्म मो अनादि साथ;
वहु विधि नचाय नाच, बाजीगर भयो है ।
निगोद तें नर्क जाय, त्रस थावर दुःख पाय;
करम शुभ उदय आय, मानुष जन्म लियो है ॥
जगत को असार जान, अन्य ठौर सुख न मान;
चरणन जिनेश आन, शरण नाथ लियो है ।
पूजूँ शुभ हेत चर्णं, तिष्ठो हृदय दुःख हर्णं;
तोरी विसारे शर्णं, कठोर दुःख भयो है ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भववषट्
सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

गंगा सम उज्वल नीर, झारी कनक भरों ।
प्रभु हरो ताप जग पीर, चरण प्रक्षाल करी ॥
सुपार्श्वनाथ जिनचन्द, मेरी अरज़ सुनो ।

जगतारण तरण जिनन्द, भव आताप हनो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

मलियागिर अगर कपूर, मेल कटोरी में ।

चरचे युग चरण हजूर, ताप नशावन मैं ॥

सुपार्श्वनाथ जिन चन्द० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोगविनाशनाय चन्दनम्

अक्षत ले अमल अखण्ड, रकावी कंचन में ।

किये पुञ्ज होन अभङ्ग, प्रभु युग चरणन में ॥

सुपार्श्व नाथ जिनचन्द० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् नि०

लें सुरभित पुष्प जगेश, चुग चुग निज करसे ।

तुम चरणन मेल जिनेश, चाहूँ काम नशे ॥

सुपार्श्वनाथ जिनचन्द० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् ।

बहु नेवज ले भर थार, तुम जिन भेंट करी ।

मम क्षुधा नाश करतार, दाता दुःख खरी ॥

सुपार्श्वनाथ जिनचन्द० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोहांध सतायो नाथ, समकित ज्ञान हरो ।
यूं लायो दीपक हाथ, करम कलेश हरो ॥
सुपार्श्वनाथ जिनचन्द० ॥६॥
ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहाँधकार विनाशनाय दीपम्

विधि आठों मिल दुःख देत, नैक न कान करैं ।
हम जारन इनके हेत, अगनि पर धूप धरैं ॥
सुपार्श्वनाथ जिनचन्द०॥७॥
ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम् निर्वपा०

बहु आम नारियल केल, नरंगी सेव लिये ।
पद मोक्ष मिलन फलमेल, बहु विधि गान किये
सुपार्श्वनाथ जिनचन्द०॥८॥
ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामी०

ला आठों द्रव्य नमि शीश, सुवरण थाल भरा ।
कर अर्घ चरण जग ईश, दीनी धार धरा ॥
सुपार्श्वनाथ जिनचन्द० ॥९॥
ॐह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घम् निर्वपा०

पञ्चकल्याणक

भादों शुक्ला छट्ठ को, आये गर्भ जिनेश ।

मात पिता हर्षित दोउ, नाशे जगत कलेश ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भादों सुदी ६ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जेठ सुदी द्वादशि जनम, अवधि ज्ञान परमेश ।

चढ़ चढ़ वाहन देव सब, चले करन अभिषेक ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जेठ सुदी १२ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म तिथी चढ़ मनोरमा, तले शिरीष प्रभात ।

केश उखारे निज करन, छोड़ा परिजन साथ ॥३

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जेठ सुदी १२ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तप कीनो नौ वर्ष तक, वदि फागुन छठ जान ।

भयो ज्ञान केवल प्रकट, कियो देव गुण गान ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फागुन वदी ६ केवलज्ञानप्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

फागुण सप्तमि श्याम की, अनुराधा नक्षत्र ।

धर सन्यास गिर शिखर से, पहुँचे मोक्ष पवित्र ॥५

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फागुनवदी ७ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाल

गही है शरण जिन आके तिहारी, तारो न तारो है मर्ज़ी तिहारी। किये हैं बहुत पार तुम ने जगत से, रखता हूं तेरा भरोसा भारी ॥१॥ कर्म ने सताया मुझे जिस क़दर है, ज़बाँ एक तासे न होता उचारी। थकित एक मैं ना गणी अर मुनीश्वर, फ़क़्त जानता है पञ्च ज्ञान धारी ॥२॥ छुड़ा न जो पीछा मेरा गर कर्म से, जगत नाथ होकर हँसी है तिहारी। तुम्हें छोड़ अब मैं किस जाँ पे जाऊँ, मिली है शर्ण नाथ मुश्किल तिहारी ॥३॥ फँसा अब तलक था मैं मिथ्यात फँदे, तेरे दर पै आया सम्यक् भिकारी। करो दान स्वामी अर्ज़ "बाल" करता, लगी रहे प्रीति चरणन हमारी ॥४॥

घत्ता—तुम गुण सागर, सुजश उजागर, नाथ मुझे भव पार करो। मैं निपट अज्ञानी, सुध विसरानी, दोष मेरा यह माफ करो ॥।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—श्रीसुपार्श्वके पद कमल, पूजें मन वच काय
ते भवि बहु सुख भोगके, अंत शिवालय जाँय ॥

इत्याशीर्वादः

श्री चन्द्रप्रभु पूजा ।

❀ चौपाई ❀

चंद्र वदन श्रीचंद्रजिनेशा । गर्भ सुलक्षण मात प्रवेशा ॥ छै नव मास रत्न अति वर्षे । कर कल्याण देव अति हर्षे ॥ चंद्रपुरी जब जन्म लियो है । महासेन बहु दान कियो है ॥ लख असार जग तप धारा । केवल त्रय लोक निहारा ॥ चढ़ सम्मेद मुक्ति पग धारे । तिष्ठ तिष्ठ प्रभु हृदय हमारे ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

जल प्राशुक भारी हाथ लई, करी अर्पण श्री जिन चरणों में । बहु जनम जरा दुख ताप

सही, इम नायो मस्तक चरणों में ॥ लज चंद्र जिनेश्वर चन्द्र लही; शरणागत प्रभु के चरणों में। तुमरे गुण गण न जात कही, मोय ताब नहीं गुण वरणों में ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलम

केशर अगर दोउ संग घसि, प्रभु तारी कनक कटोरी में । चरचे तुम पद उर प्रीत बसी, फेर न आऊँ इस भव बन में ॥ लज चन्द्र जि० २॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनायचन्दनम्

अक्षत प्रभु अमल अखंड लिये, मुक्तासम छवि क्या वरणों में । अक्षयपद बहुते दास किये, किये पुञ्ज श्रीजिन चरणों में ॥ लज चन्द्र० ३॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

प्रभु चम्पा जूई मोरसली, लाजवन्ती किये भेले में । भर थार पुष्प जिन खिले कली, आऊँ ना कास धकेले में ॥ लज चन्द्र जिने० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् ।

प्रभु भांति भांति पकवान बना, भरि भरि कर

उत्तम थाल सजा। कर नृत्य प्रभुजी ढिंग गान सुना, चेपे हैं छुधा नशावन आ॥ लज० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय छुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्॥

मणि दीपक ज्ञान उदय कारण, की आरति गुण जिन वरणों में। प्रभु मोह तिमिर करदो टारण, निज शीश नवायो चरणों में॥ लज चन्द्र० ६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्॥

दश गंध हुताशन माँहि धरी, प्रभु कारन करम नशावन में। इन टारन में क्यों देर करी, इम टेरत श्रीजिन पाँवन में॥ लज चन्द्र जिनेश्वर चन्द्र लही, शरणागत प्रभु के चरणों में। तुमरे गुण गण न जात कही, मोय ताव नहीं गुण वरणों में॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्।

नाना विधि फल ले भेंट धरूँ, फल मोक्ष रमण हित चरणोंमें। फेर न मैं भव का वास करूँ, प्रभु रहूँ सदा तुम चरणोंमें॥ लज० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्॥

जिन जल चंदन अक्षत पुष्प लिये, कर शेष भले गुण वरणनमें। अब विनय सहित जिन अर्घ किये, किये अर्पण थाँ के चरणनमें ॥ लज० ६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

चैत श्याम तिथि पञ्च, आये श्री जिन गरभमें।
दुख नहिं पायो रञ्च, थान गर्भ सम फटिकमणि॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय चैत बदी ५ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

भयो जनम जिनचन्द, ग्यारस बदि बैशाख को।
लजत भयो जब चन्द,पर्यो चरण जिन आयके॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनन्द्राय बैसाख बदी ११ जन्म मगल प्राप्ताय अर्घम निर्वपामीति स्वाहा।

जान्यो जगत असार,जनम तिथि प्रभु तप लियो।
करी थुति इंद्र अपार, कच लौंचे निज करन से॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय बैसाख बदी ११ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

फागुण सप्तमि श्याम, लियो ज्ञान तादि पाँचवों।
देव सुपहुँचे आन, समोशरण शोभा रची ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय फागुन वदी ७ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

समोशरण तज थान, चढ़े समेदाशिखर पर ।
ज्ञान तिथी शुभ जान, जाय वरी शिवसुन्दरी ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय फागुनवदी ७ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

श्री चन्द्रप्रभु जिनराज तेरी, मैं शरण चरण, अब आन गही । बिन सेवा दुःख मैं घोर सहे वोह विथा नाथ ना जात कही ॥ निगोद निकस, एकेंद्री भया, फिर विकल त्रय पर्याय लही । पाँचों इन्द्री भी पा करके, वश कर्म असैनी योनि लही ॥१॥ मैं नरकों में दुःख घोर सहे, जानत नाथ जो वेद सही । उदय योग यदि देव भया, माला मुरझावत ताप लही ॥ तुम दया भई जब मनुष्य भया, विषयनमें आयु विताय दई । अब श्रावक कुल में जन्म भया, समकित अब भी ना नाथ लई ॥२॥ देव धरम विसराये सभी,

जिनवाणी कभियन कान दई । वृथा वादो बक-वाद किये, लिया मनुष्य जन्मका लाभ नहीं ॥ धृक धृक है इस जीवनको, तुमरी ना प्रभु जी शरण गहो । अब कृपा तिहारी स्वामिन् हो, शुभ कामों बीते आयु रही ॥३॥ समकित का दान मिले मुझ को, हट जाय वेद दुःख देत खरी । मिथ्या अंधियारी के ऊपर, बरसे निशि वासर ज्ञान झरी ॥ मैं समता भाव धरूँ उर में, तज कर प्रभुजी धन माल सभी । परिजन से ममता भाव तजूं, फिर याद करूँ नाँ भोग कभी ॥४॥ तज प्राण तिहारे चरण बसूं, जिस जाय विराजे आप वहीं । यह "बाल" जोर कर अर्ज़ करे, कर दया दान दो नाथ यही ॥५॥

घत्ता—श्री चन्द्र जिनेशं, हरो कलेशं, विघ्न विनाशक जगतपती । मम तिमिर विनाशो, ज्ञान प्रकाशो, करो वेग प्रभु शुद्ध मती ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—जो जन मन बच काय से, पूजें श्रीजिनचंद ।

पावैं ते सुख संपदा, हरैं जगत के फन्द ॥

इत्याशीर्वादः

श्री पुष्पदन्त पूजा ।

※ छन्द ※

सुग्रीवनंदन जगत वंदन, पुष्पदंत जिनेश्वरो ।
रामादे उर मात जाये, पद लह्यो तीर्थेश्वरो ॥
सौ धनुष तन शुक्ल सोहे, मगर चर्ण सुहावनो ।
जिन निहारे दर्श जिनवर, कियो तन मन पावनो ॥१
अष्ट योद्धा दल पछाड़े, क्षमा शक्ति कर गही ।
ध्यान को मंत्री बनाकर, नार मुक्ती वर लही ॥
जा विराजे जग शिखर पर, हम यहाँ पूजा करैं ।
आविराजो हृदय हमरे, वार त्रय तुम थुति करैं ॥२

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

झारी जल प्राशुक समुद क्षीर, ढोरो तुम चर-

णन हरन पीर। मम जन्म जरा दुःख सहे शरीर, कर कृपा रोग मेरो नशाय ॥ श्री पुष्पदंत भये शिव महन्त, दो मोच पंथ दुर्गति नशाय ॥१॥

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

संसार भ्रमण में दुःख घोर। जिन को आवत नहिं प्रभु ओर ॥ अलि चन्दन केशर करत शोर, चरचे तुमरे प्रभु चरण आय ॥ श्रीपुष्प० २

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय संसारताप रोगविनाशनायचन्दनम्

प्रभु जगत भ्रमण में गयो काल, अब तक स्वामी न हुवे दयाल। पद अच्च मिले तजूं जगत जाल, करूँ पुञ्ज श्री जिन शरण आय ॥ श्री पुष्पदन्त० ॥३॥

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम् नि०

प्रभु काम बाण दुःख दियो अनन्त, अब तक ना आयो ताको अन्त। कारण टारण जो दुःख सहन्त, धरे पुष्प भेट मँहकाय लाय॥ श्रीपुष्प० ४

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम्।

प्रभु क्षुधा रोग वहु भोग भोग, नशत ना लागो प्रवल रोग। तुम विन मेटन ना मिलो जोग, मेले नेवज वहु प्रीत लाय ॥ श्री पुष्पदंत० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम

में मोह तिमिर में अन्ध होय, भूल्यो पथ समकित ज्ञान खोय। ले दीपक निज कर ज्ञान जोय, प्रभु करी आरती तम नशाय ॥ श्रीपुष्प० ६

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम

यह अष्ट कर्म मिल मो दहन्त, हर जनम जनम पीछा लहन्त। जारन कारन रिपु शिव महन्त, दी धूप तिहारे ढिंग जराय ॥ श्रीपुष्पदंत भये शिव महन्त, दो मोक्ष पन्थ दुर्गति नशाय ॥ ७

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम निर्वपा०

अब मिलन मोक्ष पद श्रीजिनेश, काटो श्री जिनवर जग कलेश। चहुंगति का दुख ना रहे लेष, फल अर्चित किये तुम भेंट आय ॥ श्री पुष्प० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति

प्रभु अष्ट द्रव्य लिये सजा थार, अब तो सेवक दुख टार टार। कर गान नृत्य तुमरी अगार, कियो अर्घ भेट जिन शरण आय॥ श्री पुष्पदन्त भये शिव महन्त, दो मोक्ष पन्थ० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

दोहा—फागन नौमी श्याम की, गरभ विराजे आय।
सुरपति देवन सहित आ, निरतत तूर बजाय॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय फागन वदी ६ गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घम्

पड़वा मंगसिर श्वेत की, जनमे श्री भगवान।
निज निज बाहन सज चले, देवादिक जिन थान॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी १ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

भोग बीज विष जानकर, परिजन वनिता बेल।
जनम दिवस प्रभु बन गये, करी करम की गैल॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मँगसिर सुदी १ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम्।

कातिक दोयज शुकल तिथि, प्रघटो केवलज्ञान।
देवन अवधि विचार विधि, समोशरण रच आन॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय कातिक सुदी २ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् ।

भादों सुदी तिथि अष्टमी, दिन के पिछले पहर ।
जाय लई निधि मोक्ष की, करो दास पर महर ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय भादों सुदी ८ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् ।

जयमाल

छंद—जय जय जय जय प्रभु पुष्पदन्त । पायो ना को गुणन अन्त ॥ मुनिगण सुरपति ना लह्यो अन्त । फिर हम जैसे किम कह सकन्त ॥१॥ गुण वरणन की हम शक्ति नाँय । अघ टारन कारन परे पाँय ॥ हम चाहत हैं गण मुनि महन्त । अघ टार लखैं शुभ मोक्ष पन्थ ॥२॥ तुमको है प्रभु कुछ कठिन नाँय । तुम यश प्रघटे सुख हम लहाँय ॥ धर वार वार तुम चर्ण शीश । माँगत वर थाँमे जगत ईश ॥३॥ तुम चरण कमल में चित रहन्त । सुरपति पदवी हम ना चहन्त ॥ इम करत बीनती सुनो नाथ । बिछुरे न "बाल" तुम चर्ण साथ ॥४॥

घत्ता—भव विपति निवारण, तुम गुण धारण, शरण चरण की आन गही । वसु कर्म हनीजे, ढील न कीजे, जगत मांहि बहु ताप सही ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय महार्घम निर्वपामीतिस्वाहा ॥

दोहा—प्रभु छंद बंध जानूं नहीं, कियो न सूत्र अभ्यास । भूल चूक चाहूं क्षमा, कीजे तिमिर विनाश ॥५॥

इत्याशीर्वाद.

श्रीशीतलनाथ पूजा ।

* छप्पै *

भद्रशाल पुरी जनम, सुनन्दा देवी मय्या ।
जिन द्रढ पित चरण,कल्पतरु चिन्ह धरय्या ॥
तुम तुंग धनुष नव विन्दु,काय स्वर्ण सम लय्या ।
अच्युत स्वर्ग तजो थान तीर्थ पद मुक्त करय्या ॥
पूजूं शीतल जिन चरण जुग, भव दधि तारण जगत तुम । मैं घोर सहे दुख जगत वश, देखे प्रभु दुख रहित तुम ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

जगत भ्रमण निशि दिन दहन्त । प्रभु जन्म मरण आयो न अन्त ॥ ताप नशावन ले जल जिनन्द । तुम चरण पखारे काट फन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्,

संसार तप्त में भयो लिप्त । जानत सब तुम से नाहिं गुप्त ॥ चरचूं चर्णन केशर सु लाय । चाहत हूँ इम जग तप्त जाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनायचन्दनम्

भ्रमत जगत बहु भयो काल । स्वामी मो पै होउ दयाल ॥ मैं किये पुञ्ज अक्षत अखंड । फेर न होवे मम जगत हंड ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मैं बहुत भ्रमायो जग जगेश । काम बाण दुख दीये विशेष ॥ ला पुष्प नशावन काम हेत । तुम चर्ण चढ़ाये श्रीजिनेश ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

मम क्षुधा रोग नाशन जिनन्द । काटन श्री जिनवर जगत फन्द ॥ नाना नेवज प्रभु लिये हस्त । तुम चरण चढ़ाये जिन पवित्त ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

ले दीप हरन मोहान्धकार । मेले जिनंद में जार जार ॥ चाह है यह मो उर मझार । दो सिखा ज्ञान मम हृदय जार ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्

करम अष्ट मम मति करी भ्रष्ट । इन कारण भोगे दुख अनिष्ट ॥ इनके जारन का करि विचार । दी धूप प्रभु पावक प्रजार ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

प्रभु लख चौरासी का न अन्त । चिरकाल भ्रमत बहु दुख सहन्त ॥ तुम मुक्ती फल दायक दयाल । यूं भेंट तेरी नाना रिसाल ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्

जल चंदन अक्षत सगंध पुष्प । नेवज दीपक ले धूप युक्त ॥ ले बादामादिक फल अनंत ।

हे अरघ भेट जिन शिव महंत ॥६॥

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम

पंचकल्याणक

गरभ भयो जिनराज को, पहली अष्टमि चैत।
सुरपति देवन संग लिये, गर्भ कल्याणक हेत ॥१

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत वदी ८ गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घं

तिथि शुभ द्वादशि माह वदि, जनमे त्रिभुवन ईश।
ऐरावत सुरपति सजा, आन नवायो शीश ॥२

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय माह वदी १२ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

भद्रशाल पुरी जनम दिन, जान्यो जगत असार।
शुक्रप्रभा चढ़ पालकी, शालि तले तप धार ॥३

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय माह वदी १२ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

पौष वदी तिथि चतुर्दशी, प्रघटो केवलज्ञान।
समोशरण रचना करी, देवन निज कर आन ॥४

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष वदी १४ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०

आश्विन शुक्ला अष्टमी, प्रथम पहर दिन नाथ।
लियो सम्मेदा अचलपद, सहस्र मुनिशन साथ॥५

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आसौज सुदी ८ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

शीतल जिनेश मम हर कलेश । या जगत मांहि आपति अनेक ॥ टेक ॥ तुम तजी शरण यों कियो भ्रमण । इतनी ना बुद्धि जो सकूँ वरण ॥ तातें अब तुम मैं गही शरण । कर दया नेक दो मो विवेक ॥ शीतल० ॥१॥ चहुं गति के दुख जो जो सहे । अब मोसे वह नहीं जाते कहे ॥ वहाँ न कोई सहाई भये । पायो न चैन मैंने छिनेक ॥ शीतल० ॥२॥ मैं नाथ तुम ही दीनन सुने । गह क्षमा करम दल आपै हने ॥ मुक्ती दुलहन वर आपै बने । शरण गहे की प्रभु राख टेक ॥ शीतल० ॥३॥ लहूँ कभी ना दुख जग भ्रमण । रहूँ सदा तुम चरण शरण ॥ हो विषयन तज सल्लेखण मरण । वर चहै "बाल" कर नजर नेक ॥ शीतल जिनेश मम हर कलेश । या जगत मांहि आपति

अनेक ॥४॥

घत्ता–शीतल जग नायक, सब जन सुखदायक, त्रिभुवन में सर ताज प्रभु । तुमरे ढिंग आयो, पद शीश नवायो, राख बाल की लाज प्रभु ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा–शीतल जिनवर चरण हम, पूजत कर अभिषेक ॥ मिथ्या मति हर हमन की. दीजे दान विवेक ॥

इत्याशीर्वाद.

श्री श्रेयांसनाथ पूजा ।

कवित्त

धरी अस्सी धनुष काय, चौरासी लाख वरष आय, पिता भये विमलराय. गोद विमलादे खिलायो है । सिंहपुरी जन्म पाय. चिन्ह गेंडा पद लहाय. चतुर्गति काय देव आय. शीश निज निज नवायो हैं ॥ किये ध्यान तप कठोर. जीती है परिषह घोर, जेर किये कर्म चोर, चित सुमेर ना हिलायो हैं । तोड़ी है जगत

फाँस, लियो है मुक्ति वास । धन्य धन्य श्री श्रेयांस, मैं दरश आज पायो है ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

झारी नीर झकोर, प्राशुक हेम भरी ।
दई धार कर जोर, शरण तुम चरण गही ॥
श्रीश्रेयान्स जिनेश, आन मैं शरण गही ।
मेटो करम कलेश, बहुत आताप सही ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

केशर घसि चन्दन संग, लेपन श्री चर्ण लई ।
अब धरूँ फेर ना अंग, मिले वरदान यही ॥
श्रीश्रेयान्स० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम्

अच्छत मुक्ता उनिहार, विडारन काल घरी ।
किये पुञ्ज भर थार, मृत्यु संग बुरी परी ॥

श्रीश्रेयान्स० ॥३॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम

काम सतायो नाथ. भव भव बुद्धि हरी ।
फेर गहे ना साथ. पुष्प द्रुम मेलि लरी ॥

श्रीश्रेयान्स० ॥४॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम

लग्यो क्षुधा को रोग, न छोड़ा साथ कभी ।
हरो नाथ भव रोग, भेट पकवान धरी ॥
श्रीश्रेयांस जिनेश. आन में शरण गही ।
मेटो करम कलेश, बहुत आताप सही ॥५॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम

मोह महा बलकार. समकित नाश करी ।
हरो नाथ अंधकार, जगादो ज्ञान भरी ॥

श्रीश्रेयांस० ॥६॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम

दुष्ट करम लगे साथ. चतुरगति त्रास करी ।
इन जारन जिन नाथ. धुपायन धूप धरी ॥

श्रीश्रेयांस० ॥७॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम

विश्व भ्रमण विष बेल, लिपट मो साथ रही ।
मोक्ष मिलन फल मेल, चरण मैं शरण गही ॥
श्रीश्रेयांस० ॥८॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

अष्ट द्रव्य किये मेल, कनक कटोरी भरी ।
तुम पद दीने मेल, महिमा बखान करी ॥
श्रीश्रेयांस० ॥९॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्

पंचकल्याणक

चौपाई—जेठ बदी छठ गरभ मझारी । आय विराजे करुणा धारी ॥ करी कुवेर पुरी की शोभा । बरसाये कंचन तज लोभा ॥१॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जेठ बदी ६ गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घम्

ग्यारस फागन की अंधियारी । जनमें जिनन्द ज्ञान त्रय धारी ॥ ले ऐरावत सुरपति आयो । पाँडुक पर अभिषेक करायो ॥२॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय फागन बदी ११ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जनम दिवस नख रोहणि माँही । तप धारो छांडी प्रभुताई ॥ विमलप्रभा चढ़ आम् वन पहुँचे । निज कर मुष्टि पंच कच लौंचे ॥३॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय फागन वदी ११ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

प्रभु तप तपत कछुक दिन बीते । माह वदी मावस दिन नीके ॥ केवलज्ञान भान परकाशो । लोकालोक चराचर भासो ॥४॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय माह वदी १५ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम नि०

श्रावण शुकला पूरनमासी । तोड़ी जगत जाल की फाँसी ॥ गिर सम्मेदशिखर खड़गासन। जाय विराजे मोक्ष सिंहासन ॥ ५ ॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय श्रावण सुदी १५ मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

जयमाला

जय जिनेश जय जिनेश, दीन प्रतिपाल हो ।
जगतईश जगतनाथ, करम दुःख टाल हो ॥टेक
करम व्याधि है अगाधि, पार को दयाल हो ।

शरण आय पार जाय, शरणि को कृपाल हो ॥ १
सेव के कुदेव नाथ, साथ ना तुम लिया ।
मैं हूं दीन बुद्धि हीन, मेरा अब ख़याल हो ॥ २
किये हैं अनेक पाप, जानो हो सकल आप ।
निगोद आय नर्क जाय, जहाँ नित्य घात हो ॥ ३
तिर्यंच भयो अनेक बार, बन्द बध दुःख अपार ।
मनुष्य भया तो कहा, सम्यक्त रत्न हीन हो ॥ ४
भयो देव माल छत्रे, देख देख दुख लहो ।
कहीं न चैन शर्ण ऐन, आप जगत तार हो ॥ ५
बिन बिवेक दुख अनेक, पाय मैं जग भ्रमो ।
काट नाथ जगत पास, फेर वास जग न हो ॥ ६
आपदायें "बाल" टाल, काटिये कर्म जाल ।
चर्ण में तिहारे नाथ, दास का निवास हो ॥
जय जिनेश जय जिनेश, दीन प्रतिपाल हो ।
जगत ईश जगत नाथ, करम दुःख टाल हो ॥ ७

घत्ता—हो जग तारण, करम निवारण, आप तिरे रिपु कर्म जरा । मैं शरणे आया, दुख बहु

पाया, मेट मेट दुख जन्म जरा ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—पूजा विधि जानूं नहीं, ना जानूं आह्वान् ।
भूल चूक जो कुछ रही, क्षमा करो भगवान् ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीवासुपूज्य पूजा ।

(कवित्त)

मदन शोभ कपट लोभ, विषयन के बुरे रोग,
बाल समय लियो जोग, दूर ही भगाये हैं ।
दूर कर अठारा दोष, छियालीस भरे कोष,
विराज कर समोशरण, चतुरमुख लखाये हैं ॥
धन्य धन्य जगत नाथ, घात के अघाति घाति,
मुक्ति में कियो निवास, जगतपति कहाये हैं ।
आप हो विवेक भान, खिलायदो 'कमल ज्ञान,
तोय तरन तारन जान, चरण शीश नाये हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

क्षीरोदधि ले जल आज, झारी कनक भरी।
दुख जनम जरा क्षय काज, तुमन प्रक्षाल करी॥
श्रीवासुपूज्य जिनराज, चरणन शीश धरूँ।
मो तारो तिरन जिहाज, फेर न जगत बसूँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

प्रभु चन्दन गंध सुगंध, कनक कटोरी भरी।
अब हरो मेरा जग फन्द, सतावत ताप खरी॥
श्रीवासुपूज्य० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप रोग विनाशनाय चंदनम्

प्रभु भ्रमत भ्रमत संसार, काल अनन्त गयो।
पद अक्षय तुम दातार. चरन में शीश नयो॥
श्रीवासुपूज्य० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मदन सतावत मोय. भव भव वास किये।
नाशन पद आयो तोय, शरण में पुष्प लिये॥
श्रीवासुपूज्य० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

प्रभु क्षुधा वेद दो टार, नेवज भेट करूँ ।
अब मेट व्याधि संसार, फेर ना जन्म धरूँ ॥
श्रीवासुपूज्य जिनराज, चरणन शीश धरूँ ।
मो तारो तिरन जिहाज, फेर ना जगत वसूँ ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम

मोह तिमिर कियो अंध, भ्रमण गति चार कियो ।
अब करो प्रकाशित चन्द, दीपक हाथ लियो ॥
श्रीवासुपूज्य० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम

यह दुष्ट अष्ट में एक, भव भव दगा करैं ।
रख शरण गहे की टेक, फेर न वेर करैं ॥
श्रीवासुपूज्य० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम

बादाम आदि फल साज, मेवा विविध खरी ।
फल मोक्ष मिलन के काज, मेल पद अरज करी ॥
श्रीवासुपूज्य० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम

जल फल आदिक वसु द्रव्य, थाल सजा करके ।

किये पुञ्ज चरण सर्वज्ञ, तुम गुण गाकरके ॥
श्रीवासुपूज्य० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

आषाढ छट्ठ अंधियारी, प्रभु आये गरभ मंझारी ।
देवन आ उत्सव कीनो, शुभ मति को लाहो लीनो ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय आसाढ बदी ६ गर्भमंगल प्राप्तायअर्घम्

फागुन बदि चौदश जाये, पद चिन्ह महिष लगाये ।
प्रभु ज्ञान तीन जुत आये, हरि लोचन सहस्र बनाये ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फागन वदी १४ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

त्यागी जिन संपति सारी, प्रभु भये बाल ब्रह्मचारी ।
जब जन्म दिवस हरि आये, लौंचे कचक्षीर बहाये ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फागन वदी १४ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् ।

दोयज प्रभु माह उजारी, जीते चारों घतिकारी ।
प्रघटे पंचम तब ज्ञाना, प्रभु लोकालोक पिछाना ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय माह सुदी २ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् ।

भादों सुदी चौदश शुभदिन, चम्पापुर धर पद्मासन।
पहुँचे हो मुक्ति मंझारी, है चरनन ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भादों सुदी १४ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

जयमाला

वासुपूज्य बारहवें चन्दा। तुम दरशन लख होत अनन्दा॥ द्वादश शशि ताके मग होवें। तुम पद पूजें गृह दुख खोवें॥१॥ मंगल सकल भये चम्पापुर। लूटे हर्ष कल्याण सुरासुर॥ तुमरी शरण अनेकन आये। तुम परमारथ पन्थ लगाये॥२॥ पुण्यवान तारो जो कोई। ऐसे को अचरज नहीं होई॥ मो सम पापी का निस्तारा। करो नाथ यश होय तिहारा॥३॥ कबहु न नाम लिया प्रभु तेरा। जा प्रसाद किया जगत बसेरा॥ भ्रमत भ्रमत भयो काल अनन्ता। जामन मरण भया नहीं अन्ता॥४॥ नाथ कृपा अब ऐसी कीजे। तुम वरदान 'बाल'

को दीजे ॥ जगत छाँड बसूँ जग ऊपर । तुम पद रज मम मस्तक ऊपर ॥५॥

घत्ता—दीनन के दाता, सुयश विख्याता, करो पार दधि नाव परी । मिथ्या मग धारा, सुयश विसारा, दया करो भरे ज्ञान भरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—वासुपूज्य जिनराय, सकल ज्ञेयज्ञायक प्रभू।
मोह तिमिर विनशाय, बाल सभय तप आदर्यो ॥

इत्याशीर्वाद

श्री विमलनाथ पूजा ।

* चौपाई *

विमल विमल किये विमल अनन्ता । तुम गुण को को पायो न अन्ता ॥ सुर नर मुनि गण पच पच हारे । नहिं सम्पूरण जात उचारे ॥ छियालीस थक शासन गाये । लक्षण सहस्र आठ बतलाये ॥ तुम हो नाथ गुण लक्षण सागर । तासे भर लीनी इक गागर ॥ मैं मति

हीन शरण तुम लीनी । समरथ बिन रसना वस कीनी ॥

॥ दोहा ॥

गुण वरणनकी बुधि नहीं, नहिं विद्या ना ज्ञान ।
तुमरे गुण प्रभु ग्रहण हित, ठानी पूजा आन ॥
मोह तिमिर का नाश हो, ज्ञान प्रकाशित होय ।
तिष्ठो नाथ मम आन उर, नमूँ वार त्रय तोय ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

ले जल झारी गंग समान, प्राशुक नीर भरी ।
कर जोरे दोऊ भगवान, चरण प्रज्ञाल करी ॥
करो विमल विमल जिनदेव, आतम मलिन मेरी ।
करो वेग मलिन जिन छेव, आयो शरण तेरी ॥१

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

प्रभु चन्दन आदिक महँकार, केशर साथ डरी ।

तुम चरनन पर दई धार, मानों मेघ झरी ॥
करो विमल० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप रोग विनाशनाय चंदनम्

यह तन्दुल अक्षय पद कार, अमल अखंड लिये
मिटा व्याधि जनम सरकार, करम बहु दंड दिये ॥
करो विमल० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मैं चुन चुन लिये पुष्प सुगंध, टारन मदन रिपू ।
हैं नोछावर नाशन फन्द, तुमको जान हितू ॥
करो विमल विमल जिनदेव, आतम मलिन मेरी ।
करो वेग मलिन जिन छेव, आयो शरण तेरी ॥४

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम्

यह क्षुधा हत्यारी नाथ, भव भव दुखित करै ।
लायो नेवज भली भांति, फेर न अहित करै ॥
करो विमल० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

लियो तिमिर मोह क्षय हेत, दीपक निज कर में ।
करो आतम ज्ञान समेत, फेर न जग भरमें ॥

करो विमल० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम

ये वसु विधि भारी बलकार, पीछा नाहिं तजैं।
दई धूप धूपायन डार, जर कर वेग भजैं ॥

करो विमल०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्.

श्रीफल आदिक लिये हाथ, तुम जिन भेट करी
फल मोक्ष देहु जिननाथ, बहु विधि भक्ति करी ॥

करो विमल० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्.

ले जल फलआदिक वसु द्रव्य भ्रम अब मेटलियो।
प्रभु में जान्यो निज करतव्य, अर्घ यों भेट कियो।

करो विमल०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घम्।

पंचकल्याणक

दोहा—जेठ वदी दसमी वसे, माता गरभ मझार।
पट् नव पंदरह मास लों, वरसे रतन अपार ॥१

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जेठ वदी १० गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घम्

माह सुदी तिथी चतुर्थी, जनमे विमल जिनेश।
इन्द्र न्हवन पाँडुक करा, सौंपे शची सुरेश॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माह सुदी ४ जन्म मंगलप्राप्तायअर्घम्

जनम तिथी पुर जनम में, तप धारो जिनराय।
केश लोंच तरु जंबु तल, कियो ध्यान चित लाय॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माह सुदी ४ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

माह उजयारी छट्ठ को, प्रकटो केवलज्ञान।
तीनों लोक प्रकाशको, भयो उदय उर भान॥४

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय माह सुदी ६ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०

साढ़ अष्टमी श्याम की, शिखर सम्मेदा शीश।
शेष चार को नाश कर, भये शिरोमणि ईश॥

ॐ ह्रीं श्रीवमलनाथ जिनेन्द्राय असाढ बदी ८ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाल

चौपाई—पद विमल विमल तुम देनहार।
अतुलित अगणित गुण के भंडार॥ क्षुधा तृषा

दोऊ राग द्वेप। ना जनम जरा मृतु रोग लेप॥
१॥ भय विस्मय निद्रा शोक खेद। मद आरति
मोह चिन्ता न भेद ॥ भयो बंद झरत तन
पसेव। तुम दोष अठारा किये छेव ॥२॥ गुण
छियालीस तुम धार नाथ। विषयन कषाय को
छाँड साथ ॥ लई तीस चार अतिशय जिनेश।
दस जनम ज्ञान दस देव शेप ॥३॥ गहे प्राति-
हार्य आठों जिनन्द। नित भोगत भये चारों
अनन्द ॥ करुणा सागर करुणा निधान । कर
दया दास इम करत गान ॥४॥ भव पाश नाश
मेरी दयाल। ले चरण शरण में हो कृपाल ॥
मैं रहूँ सदा चरनन मझार। विन सेवा भयो
मैं अधिक ख्वार ॥५॥ अब चरण शरण छूटे
न नाथ। इम 'बाल' चहे वर नाय माथ ॥६॥
घत्ता—हे प्रभु जग तारी, करुणा धारी, तार तार
मति देर करो। जग जन हितकारी, दीन दु-
खारी, दास 'बाल' भव पार करो ॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा—विमल करन नाशन विघन, दयामूर्त जग ईश। जग दावानल दमन को, 'बाल' नवायो शीश ॥

इत्याशीर्वादः

श्री अनन्तनाथ पूजा।

* छंद *

सूर्यादेवी माय, पिता सिधसैन भये हैं ।
जनमे अयुध्या आय, बारवें स्वर्ग चये हैं ॥
इन्द्र महोत्सव धाय, शीश तुम चरण नये हैं ।
तप कर केवल पाय, घाति चउ दूर गये हैं ॥
सम्मेदा गिर चढ़ प्रभु शिव वरी, अनन्तनाथ पूजूं चरण। तीन बार आव्हानन करी, मेट नाथ जामन मरण ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्रातवरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

अथाष्टक

जगतपति बहु भविजन निस्तारे, है अब बारी

हमारी ॥ टेक ॥

भाव सहित कलश भरे उत्तम, कंचन वरण संभारे।
प्राशुक नीर चीर सम उज्वल, थाँके चर्ण पखारे ॥
जगतपति० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

चन्दन अगर कपूर मिलाये, तापर अलि गुंजारे।
नाथ नशावन जगत जालको, चरचे चर्ण तिहारे ॥
जगतपति० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम्

अक्षत अमल अखंड जिनलिये, हर्षित हिये अपारे।
अक्षय पद के हेत जिनेश्वर, पुञ्ज किये ढिग थारे ॥
जगतपति० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मोरसली बेला चम्पाके, पुष्पनि जाति अपारे।
मदनरिपुकी तपत मिटावन, मेले चर्ण अगारे ॥
जगतपति० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

क्षुधारोग को प्रतिभव संगम, डायन जिम ललकारे।
भविप वेद यह भिन्न करनको व्यंजन भेट तिहारे ॥

जगतपति बहु भविजन निस्तारे, है अब बारी हमारी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोह तिमिरवश आपा भूला, पर में प्रेम विचारे ।
फेर ना भ्रष्ट अनिष्ट की संगति, दीपक नज़र तिहारे ॥
जगतपति० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्

अष्ट दुष्ट मिल सब एक ही संग, रहते संग हमारे ।
जारन कारण बसुविधि स्वामिन, गंध हुतासन डारे

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

जगतपति० ॥७॥

भ्रमत भ्रमत जग मांहि जिनेश्वर, भयो काल विस्तारे । मुक्ति महल पद धारन कारन, ले फल दर्श निहारे ॥ जगतपति० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

आठ द्रव्य लिये नृत्य गान जुत, तीन गुप्ति में धारे । पद अनर्घ हो शरण चरण नित, माँगत हस्त पसारे ॥ जगतपति० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्

पंचकल्याणक

छंद—मात ने शुभ स्वपन देखे, कातिक वदी पड़िवा दिना। गरभ मांहि प्रवेश कीना, तव वरसे कंचन घन विना ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय कातिक वदी १ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

वदी जेठ की एकादशी, जनम पुरी अयोध्या भयो। पाँडुक न्हवन हरि ने करा, पद इन्द्र को लाहो लियो ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय जेठ वदी ११ जन्म मंगल प्राप्तायअर्घम्

जेठ पहली द्वादशी शुभ, संध्या समय तप धारियो। पालकी चढ़ दत्त सागर, निज करन केश उखारियो ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय जेठ वदी १२ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

चैत मावस श्याम केवल, भानु प्रघटा सव तम दले। समोशर्ण के रचन कारण, सज देव वाहन चढ़ चले ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैत वदी मावस केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०

ज्ञान की तिथि नक्षत्र भरणी, उत्तम शिखर सम्मेद परं। शेष चार अघाति नाशे, दूले भये शिव नारि वर ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैतबदी मावस मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

श्रीजिन अनन्त, तुम गुण भनन्त।
मुनिगण थकन्त, ना कोई बरणय्या ॥टेक
मैं बुद्धि हीन, हूं कुमति लीन।
आतम मलीन, तुम निरमल करवय्या ॥१॥
तुम सकल ईश, बसे जगत शीश।
जीते खबीस, हो तारन तरवय्या ॥२॥
अवगुण ना एक, हैं गुण अनेक।
रखी शर्ण टेक, तुम तारक शरणय्या ॥३॥
बसु विधि बसाय, धर अनन्त काय।
कर जग भ्रमाय, मैं तुम सुध बिसरय्या ॥४॥
शुभ उदय आय, ली मनुष काय।
जिन शरण आय, तुम चरनन सिर नय्या ॥५॥

कर क्षमा नाथ, मैं हूँ अनाथ ।
अब कर सनाथ, हूँ चहुँगति दुख पय्या ॥६॥
कर करम नाश, आतम प्रकाश ।
दुरगति विनाश, बुरी जग भिरमय्या ॥७॥
कह दास "बाल", बुरा कर्म जाल ।
तोड़ो दयाल, इम तुमरे गुण गय्या ॥८॥
घत्ता—तुम गुणन भंडारी, करुणा धारी, तारण तरण पुराण कहे । मैं जगत दुखारी, सेवा धारी, भव भ्रमण मिटा. दुख घोर सहे ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—तुम हो दीनानाथ प्रभु, मैं हूँ दीन अनाथ ।
तार तार भव भँवर से. मिले चर्ण तुम साथ ॥

इत्याशीर्वाद

श्री धर्मनाथ पूजा ।

(कवित्त)

धर्म को भयो विच्छेद, जन्म धार कर अछेद ।
अधर्म विघटाय नाथ, शुभ धर्म प्रघटायो है ॥
जग को असार जान, गह धर्म दस उत्तम महान ।

धार तप द्वादश जिन, निज आतम तपायो है ॥
चिन्ह चरण में बज्रदण्ड, ज्वाला तप भई प्रचंड ।
कियो कर्म खण्ड खण्ड, जिन जर से जरायो है ॥
चढ़े हो गिर सम्मेद, समोशरण कर विच्छेद ।
शुभ धार अशुभ छेद, नाथ सिद्ध पद पायो है ।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर। संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

दुग्ध उनिहारी ले जल झारी, तुम चरनन प्रचाल करी । जनम मरण भय रोग बुढ़ापा, हरो प्रभु क्यों देर करी ॥ धर्म धुरा तुम धर्म प्रचारक, बहु भव्यन पर दया करी । धर्म प्रकाश्यो, अघमग नाश्यो, मुक्ति नार जग टार बरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

ले मलयागिर केशर घसि कर, झारी कंचन स्वच्छ भरी । लेप चरण तुम हरन ताप हम,

शरन आय प्रणाम करी ॥ धर्म धुरा० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप रोग विनाशनाय चंदनम्

तंदुल अति उज्वल मुक्ता सम स्वज्जल, बना पुञ्ज तुम भेट धरी । भव दुख टारण जगत निवारण, नृत्य गान युत अरज़ करी ॥ धर्म० ३॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

पहुप लिये कर हृदय ध्यान धर, काम न दिया चैन घरी । अरज सुनीजे ढील न कीजे, तप हनीजे दु:ख हरी ॥ धर्मधुरा० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

क्षुधा दुखीने षट् रस भीने, नैवेद्य तुम नज़र करी । क्षुधा नशावो खेद हटावो, नाव नीर कर सिंधु परी ॥ धर्म धुरा तुम धर्म प्रचारक, बहु भव्यन पर दया करी । धर्म प्रकाश्यो अघ मग नाश्यो, मुक्ति नार जग टार वरी ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोह तिमिरवश निज गुण भूला, कुमति नार संग प्रीति करी । दीप अगारी धरो निहारी, नाश अंध मम भूल परी ॥ धर्मधुरा० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम्

वसु विधि मिल दल कीनो निरबल, जगत नाथ अनीत करी। धूप दशानन धर धूपायन, कर्म जरावन धूम् करी ॥ धर्मधुरा० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्

श्रीफल आदिक तृष्णा वाधिक, लेले उत्तम थार भरी। मुक्ति फल दाता सुने विधाता, मुक्त करो लो नाम वरी ॥ धर्म धुरा० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्

जल फल आदिक अष्ट प्रकारिक, अर्घ बनायो विनय भरी। तुम पद शरणाँ ढील न करणाँ, वेग मिले इम अर्ज करी ॥ धर्मधुरा० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

दोहा—तेरस बदि बैसाखकी, कीनो गर्भ निवास।
रतनपुरी रतनन भरी, बरसी रतनन रास ॥ १

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय बैसाख बदी १३ गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घम्

तेरस शुकला माह में, भयो जनम जिन नाथ।

इन्द्र करा पांडुक न्हवन, चरण नवायो माथ ॥२

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय माह सुदी १३ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

जनम तिथी जिनदेव को, देव संबोधे आय ।
चढ़ा पालकी ले गये, धारयो तप जिनराय ॥३

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय माह सुदी १३ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम ।

पौस सुदी पूनम तिथी, श्री जिन केवल धार ।
समोशरण रचना करी, अतिशय दस अरु चार ॥४

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पौष सुदी १५ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम ।

जेठ शुक्ल की चतुर्थी, नाथ लियो निरवाण ।
देव आन स्तुती करी, निज निज ज्ञान प्रमाण ॥५

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जेठ सुदी ४ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम ।

जयमाल

जय जय जग नायक नमो नमो । त्रिभुवन सुखदायक नमो नमो ॥ जय विश्व बंधु जिन नमो नमो । जय जगत अकरता नमो नमो ॥ १॥ जय शिव रमणी भरतार नमो । जय स-

कल कीर्ति करतार नमो ॥ जय जगत नाथ जग ताज नमो । जग तारण काज जिहाज नमो ॥ २ ॥ जय कोष जिनेश्वर ज्ञान नमो । जय तिमिर नशावन भान नमो ॥ जय कर्म विनाश कुठार नमो । बहु भव्य किये भव पार नमो ॥३॥ जय धर्म धुरा हर भार नमो । जग के दुख हरता सार नमो ॥ चहुँगति दुख नाशन हार नमो । जय निज पद के दातार नमो ॥४॥ अब अरज "बाल" सुन नाथ नमो । भव जाल मिटा गह हाथ नमो ॥५॥

घत्तानंद—श्रीजिन सुखकारी, भव जल तारी, तार तार मैं शरण गही । तुम से हितकारी, भ्रमण निवारी, तीन भवन में और नहीं ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—धर्म धुरंधर धर्म गुरु, धर्म चलावन हार ।
बार बार वर मांग हूँ, कर भवदधि से पार ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीशान्तिनाथ पूजा ।

कवित्त

हस्तनापुर शुभ थान मनोहर, गरभ आय जिन जनम लियो है । चिन्ह हिरण पद शुभ जिनवर के, ऐरावत हरि संग लियो है । विश्वसेन नृप द्वार पहुँच कर, मायामयी इक बाल कियो है । जनम गृह लिये हस्ती ऊपर, पाँडुक शिल अभिषेक कियो है ॥१॥ निरतत गाय बजाय भाव भर, चक्षु सहस्र कर दरश कियो है । सौंप सची जिन नाथ महीपति, शीश नवा निज थान गयो है ॥ राज कियो पट् खण्ड जगतपति, शत्रु हने पद चक्र लियो है । दास नमें कर जोर गौर कर, करम रिपु दुख खूब दियो है ॥२

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

प्राशुक जल झारी चरनन डारी, दीन दुखारी ताप सही। मम अरज़ सुनीजे ढील न कीजे, जगत तार मैं शरण गही ॥ श्रीशान्ति जिनेशा पद चक्रेशा, नमत नरेशा शान्त मई । भव जाल विनाशी शिव परकाशी, परिग्रह नाशी मोक्ष लई ॥ १ ॥

ॐह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

केशर महँकारी चन्दन लारी, घसि भर झारी धार दई। जग ताप निवारी हो भव टारी, शरण तिहारी धार लई ॥ श्रीशान्ति० ॥२॥

ॐह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम्

मुक्ता उनिहारी अक्षत महँकारी, मेल अगारी भेट दई। अक्षय पद पाऊँ जगत लुभाऊँ, करो नाथ तुम मोक्ष मई ॥ श्रीशान्ति० ॥३॥

ॐह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

हूं काम सतायो भव भिरमायो, सुख ना पायो

एक घरी । अब तुम ढिंग आयो सब ऋतु लायो, हार बनायो पुष्प लरी ॥ श्रीशान्ति०४॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम

दह क्षुधा हत्यारी टरे न टारी, भव दुखकारी अधिक भई । पकवान सुहारी भर कर थारी, नाथ अगारी मेल दई ॥ श्रीशान्ति०५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

है मोह दुखारी कर अंधियारी, धर्म मग टारी भूल दई । शुभ सुमति भुलाई कुमति मिलाई, करन नशाई दीप लई ॥ श्रीशान्ति० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्

मिल अष्ट प्रकारी रिपु दल भारी, कर तकरारी क्षोभ मई । प्रभु इन्हें जरावन निज गुण पावन, धर धूपायन धूप दई ॥ श्रीशान्ति०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

भव वास बसायो बहु दुख पायो, चरनन आयो शरण गही । नाना फल लायो भाव बढायो, तुम गुण गायो शक्ति यही ॥ श्रीशान्ति० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

दीनन दुख हारी थाल संभारी, अष्ट द्रव्य ले नज़र दई। पद अनर्घ भिखारी सेवा धारी, नाव तार भव जात बही ॥ श्रीशान्ति० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्

पंचकल्याणक

दोहा—भादों सुदि सप्तम तिथी आये गर्भ जिनेन्द्र
गरभ मंगलाकार ने, आये इन्द्र फणेन्द्र ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय भादों सुदी ७ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जेठ बदी पुष्य नक्षत्र में, चौदश शुभ दिन जान
भयो जनम जिनराज को, मंगलगान महान ॥२

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्राय जेठ बदी १४ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

जेठ बदी चौदश तिथी, धारो तप जिनराय।
चढ़ सिद्धार्थका पालकी, ले चले हरि हर्षाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ बदी १४ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

पौष सुदी दसमी दिना, केवल भयो जिनन्द ।

अवलोके तिहुँ लोक जिन, पूरण परमानन्द ॥ ४

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय पौष सुदी १० केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०

जेठ वदी दिन चतुर्दशी, भरणी नक्षत्र महान ।
श्रीसम्मेदगिर शीश से, पायो पद निरवान ॥ ५

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ वदी १४ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

चौपाई—शान्तिनाथ छवि शान्त तिहारी । ज्ञान अंध लख तिमिर निवारी ॥ शान्ति सरोवर शान्त विहारी । शान्त सुधा रस शान्ति भंडारी ॥१॥ शान्त शान्त धन शान्ति तिहारी । घोर परिषह सहे दुख भारी ॥ छांड चक्री पद दीक्षा धारी । शयन करी प्रभु भूम उघारी ॥२॥ ग्रीषम ऋतु में घाम दुखारी । शैल शिखर निश्चल तप धारी ॥ शीतकाल पशु नर अर नारी । थर थर कम्पें काय उघारी ॥ ३ ॥ परम दिगम्बर मुद्रा धारी । सरवर तट ठाड़े व्रत धारी ॥

बरषा मेघ पटल अंधियारी । ठाड़े तरुवर तल तप धारी ॥४॥ बाहन बिन ना चलत अगारी । सही परिषह कंटक भारी ॥ भाव समान भये मन धारी । तृण समान जिन परिग्रह टारी ॥५॥ द्वादश भा, हो द्वादश धारी । जाय शिखर परनी शिव नारी ॥६॥

घत्ता—श्रीशान्ति जिनेशा पद चक्रेशा, नमत सुरेशा शान्त मई । तुमरे गुण गाई पूज रचाई हरो दाह जग तप्त मई ॥

ॐह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा—शान्ति धार जिन शान्त, जो सुख सम्पत तुम लही । "बाल" विनय दो शान्ति, ऐसा वर पाऊँ वही ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीकुन्थनाथ पूजा ।

* कवित्त *

श्री जिनेश कुंथनाथ, चक्री पद छाँड साथ ।
तृष्णा से खैंच हाथ, यती पद धारो है ॥

जीती परिषह नाथ, कर्म अशुभ को खपात ।
ध्यान दो शुभन साथ, प्रभु तप विचारो है ॥
केवल भयो प्रकाश, तिमिर को भयो विनाश ।
लोकन अलोक भाप, आगम उचारो है ॥
कीनो विहार नाथ, धरम चक्र देव माथ ।
कमल पद तल लगात, शब्द जय उचारो है ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम ॥

अथाष्टक

गंगा उनिहारो नीर लाय । चरनन तुमरे दीनों चढ़ाय ॥ जनम जरा दुख मेरो नशाय । यह बुरो रोग लागो जिनाय ॥ श्रीकुंथ जिनेश्वर जगत ताज । मस्तक टेको तुम चरण आज ॥ मैं भयो दुखी भव भ्रमण काज । अब मेट भ्रमण तारण जिहाज ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

लिये चन्दन केशर संग मिलाय । जग ताप नशावन चरच पाय ॥ मैं माँगत हूँ वर शीश नाय । गहूँ तुम पद पंकज प्रीति लाय ॥ श्रीकुंथ०२॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम्

लिये बासमती अर हँसराज ।। अक्षत अखंड अक्षय इलाज ॥ कर पुञ्ज चरण में शरण आय । वर चाहूँ भ्रमण गति चउ नशाय ॥ श्री कुन्थजिने० ॥३॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

मरवा बेला महँकत अघाय । छवि मोरसली बरनी न जाय ॥ कारण टारण प्रभु बाण काम । करूँ भेट मेट दो मुक्ति ठाम ॥ श्रीकुंथ० ॥४॥

ॐह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

घेवर गूंजी पूरी जिनेश । क्षुधा रोग कियो दुखी विशेष ॥ भर थार करी मैं नजर ईश । नश जाय क्षुधा लूं जगत शीश ॥ श्रीकुंथ० ॥५॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

रिपु मोह विनाशन ज्ञान होन । भाषत ना तुम बिन और कौन ॥ लियो दीप हाथ तुम चरण

मेल । प्रभु मोह तिमिर से छुड़ा गेल ॥श्रीकुं०६

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम

हुआ अष्ट करम दल वश जिनन्द । भिरमाया चहुँगति डार फंद ॥ वसु विधि जारन को धूप लाय । धूपायन धर दीनी जलाय ॥ श्रीकुंथ०७॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

भ्रमत आयो ना चैन नैक । या कारण लायो फल अनेक ॥ फल मोक्ष मिलन कारन जि-नेश । करी भेट चरण हर्पित विशेष ॥ श्रीकु०८

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम

जल चन्दन तन्दुल पुष्पादिक । नेवज दीप धूप फल आदिक ॥ आठों द्रव्य एक कर लीने । अनर्घ काज चरनन धर दीने ॥ श्री कुन्थ जि-नेश्वर जगत ताज । मस्तक टेकों तुम चरण आज ॥ मैं भयो दुखी भव भ्रमण काज । अब मेट भ्रमण तारण जिहाज़ ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम नि०

पंचकल्याणक

श्रावण वदि दसमी दिन नीके । आये गर्भ

नाथ जननी के ॥ सकल देव आ तूर बजाये ।
मेघ समान रतन बरसाये ॥१॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय श्रावण बदी १० गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

बैसाख शुकल जन्म एकम दिन । जाचिक रहे न कोई दान बिन ॥ और चाह कछु लोकन नाहीं । लगी प्रीत तुम दरशन माहीं ॥२॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय बैसाख सुदी १ जन्ममगल प्राप्ताय अर्घम्

बैसाख शुक्ल एकम तप धारा । तिलक तरु तल ध्यान विचारा ॥ देव कल्याण काज सब आये । कर मंगल तप ठाम निज धाये ॥३॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय बैसाख सुदी १ तप मंगल प्राप्ताय 'अर्घम् नि०

चैत शुक्ल तिथि तीज सुहानी । भये जिनेश्वर केवलज्ञानी ॥ समोशरण रच मंगल कीनो । देव भये को लाहो लीनो ॥४॥

ॐह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय चैत सुदी ३ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् नि०

समोशरण छाँडो जिनराई । मोक्ष काल एक

मास रहाई ॥ शीश समेदा गिर पर जाई । जनम तिथी दिन मोक्ष लहाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय वैसाख सुदी १ मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम्

जयमाल

चौपाई—काय धनुष पैंतीस वखानी । तापे स्वर्ण सम वरण धरानी ॥ शुभ अतिशय चौतीस सहीता । भये अठारा दोष रहीता ॥१॥ समवशरण अन्तरीक्ष विराजे । सोहत छतर तीन जिनराजे ॥ भामंडल शोभा अति भारी । चतुरानन मुख झलक निहारी ॥२॥ चारों ओर सभा जिनवर की । मानव देव पशू मुनिवर की ॥ राग द्वेष कछु तहाँ नाहीं । बैठे निज निज कोठे माहीं ॥३॥ वाणी गद गद खिरत जिनन्दा । सकल सभा सुन भयो अनन्दा ॥ सभा बैठ जिन दरशन पायो । पाप नाश कियो पुण्य कमायो ॥४॥ विहार समय धर्म चक्र अगारी । चालें देव मस्तक पर धारी ॥ जय

जय शब्द निज मुखन उचारी । रचना कमल-
न पद तल धारी ॥५॥ तुम महिमा बरणी ना
जाई । बिनवे "बाल" पद मस्तक लाई ॥६॥

घत्ता—तुम गुण खाना किम सकूँ बखाना,
मुनि गण भी नहीं पार लही । मैं भक्ति बसायो
तुम गुण गायो, भूल चूक की क्षमा चही ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा

दोहा—आप तिरे भव जाल से, तारे भविजन साथ ।
करो क्षमा अब 'बाल' पर, चरण शरण दो नाथ ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीअरहनाथ पूजा ।

* सवैया *

सुन्दरसैन पिता नर नायक, मात सुमित्रा गोद
खिलाये । हस्तनापुर भयो जन्म जिनायक, देव
शची आ मंगल गाये ॥ सज ऐरावत चलो इन्द्र
तब, नाथ पौर आ तूर बजाये । ऐरावत पर
चढ़े जिनेश्वर, पाँडुक जा स्नान कराये ॥१॥
सहस्र अठारा ढुरा जिन ऊपर, भांति भांति

शृंगार रचाये । तृप्त भयो न नेत्र दो से लख, लोचन सहस्र सुरेश वनाये ॥ निरख निरख आनन्दित होकर, लाय मात की गोद पठाये । ऐसे अरहनाथ जिन पूजत, वाढ़े पुण्य और पाप पलाये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम

अथाष्टक

जल भर झारी नीर झकोर, श्री जिनवर दी चरनन ढोर । राग क्षय होय, जन्म मरण प्रभु फेर ना होय ॥ अरहनाथ श्रीजिनवर देव, तुम पद पूज करूँ मैं सेव । दया चित होय, जय जय नाथ दया चित होय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम

चन्दन घसा कपूर मिलाय, श्रीजिनवर के चर-चे पाय । फिर तप्त न होय, जगत भ्रमण के

दुख दो खोय ॥ अरह० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप निवारनाय चन्दनम्

अमल अखंडित्त अच्छत सार, जिन पद भेट पुञ्ज महँकार। अखै पद होय, जगत जाल ना फँसना होय ॥ अरह० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अच्छतम्

बेला मरवा चम्पा लार, जिन पर भँवर करत गुञ्जार। माल ली पोय, चर्ण चढ़ाई काम मल धोय ॥ अरह० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पम्

लाडू घेवर बहु पकवान, पद आगे मेले भगवान। क्षुधा दो खोय, किया दुखी भव भव में मोय ॥ अरहनाथ० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोह तिमिर के मैं वश होय, जगत जाल फँस भूल्यो तोय। दीप धर जोय, चाहूँ ज्ञान शित होय ॥ अरहनाथ श्रीजिनवर देव, पद पूज करूँ मैं सेव। दया जय नाथ दया चित होय ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्.

कर्म खिपावन अष्ट प्रकार, धूप दई धूपायन डार। शरण तुम होय, कर्म खिपावो सहायक होय॥ अरह०७॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्.

भवदधि तारण दीनदयाल, नाना विधि तुम भेट रसाल। मोक्ष फल होय, फेर स्वाँग ना धारूँ कोय॥ अरह० ८॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्

जल फल आदिक द्रव्य मिलाय, धरी भेट तुम चरनन आय। अनर्घ पद होय, तुम से दाता और न कोय॥ अरह० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्.

पंचकल्याणक

चौपाई—फागन तीज उजारी आई। गरभ मात आये जिनराई॥ करी कुबेर पुरी की शोभा। बरषाये माणिक तज लोभा॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय फागण सुदी ३ गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घम्

मंगसिर चौदस शुकल जिनेशा । जनमे उत्सव किये सुरेशा ॥ बाल लाल हरषित लख माता । जाचिक किये अजाचिक ताता ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी १४ जन्ममंगल प्राप्ताय अर्घम्

मंगसिर सुदी दसमी तप धारे । आम् तरु तल केश उखारे ॥ वैजयंत लिये चढ़ा सुरेशा । दुग्ध समुद किये केश प्रवेशा ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी १० तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् ।

कातिक दूजी द्वादश ज्ञाना । लोकालोक सकल पहिचाना ॥ दस केवल चौदह सुर करता । तीस चार धारी जग भरता ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कातिक सुदी १२ केवलज्ञान प्राप्ताय अघम ।

चैत अमावस श्याम प्रभाता । मोक्ष वरी नारी सुख दाता ॥ तुम पद श्रीजिन ढोक हमारी । भव भव मिले शरण पद थारी ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय चैत बदी अमावस्या मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

चौपाई—अरहनाथ तुम दीन दयालू । धर्म्म विच्छेद भयो कियो चालू ॥ सहस्र राय भये संग विरागी । सहस्र मुक्त लई संग गृह त्यागी ॥१॥ गणधर तीस कुन्थ मुख्य ठाना । सार सूत्र का विविध बखाना ॥ वाणी प्रभु अनक्षरी बखानी । निज भाषा में सब जन जानी ॥२॥ क्रूर जीव सुन समता धारी । राग द्वेष परिणाम विडारी ॥ वैर भाव तज प्रीत विचारी । तुम प्रसाद भये क्षमा धारी ॥३॥ चय जयंत प्रभु तीर्थ पद धारो । चक्री पद तजो जोग संभारो ॥ चढ़े सम्मेद शिखर जन ईशा । सिद्ध भये वसे त्रिभुवन शीशा ॥४॥ आठ गुणन धारक जग नायक । लोकालोक भाप ज्ञय ज्ञायक ॥ पूज्यनीक चकरेश नरेशा । इन्द्र फणेन्द्र पद नमत सुरेशा ॥५॥ विनत "चाल" दोऊ कर जोरी । राखो नाथ शरण पद तोरी ॥५॥

घत्ता—चक्री पद छाँडा बन तप माँढा, आतम मल प्रभु दूर किया। जग शिखर सिधारे अष्ट गुण धारे, शिव नारी के भये पिया ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—भये मुकत प्रभु जगत से, तोड़ी जग की पास। योही बर मोय दीजिये, सुनो "बाल" अरदास ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीमाल्लिनाथ पूजा।

* चौपई *

आयू पचपन सहस्र तिहारी। काल कुमार वर्ष सौ उचारी ॥ बाल ब्रह्मचारी ज्ञेय ज्ञाता। मण्ड-लेश महाजगत विख्याता ॥१॥ छाँडी परिग्रह तुम तप धारा। षट् दिन तप केवल आधारा। शिखर सम्मेद मुकति तुम पाई। तिष्ठो नाथ मम हिरदय आई ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम ॥

अथाष्टक

जल ले भारी हस्त, डारी तुम चरणां ।
जन्म जरा जबरदस्त, प्रभु कर दुख हरणां ॥
मोह महा प्रभु मल्ल, जीत्यो बल करके ।
करम पछारे दल्ल, आतम तप करके ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

केशर संग कपूर, भारी भर करके ।
चरचूँ चर्ण हजूर, शीश नवा करके ॥ मोह० २॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम

अक्षत अमल अखण्ड, स्वच्छ बना कर के ।
जगत भ्रमण को खंड, चाहूं नजर करके ॥मोह० ३

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम

तस नशावन काज, माला रच करके ।
धरी रण जिनराज, तुम गुण गा करके ॥ मोह० ४

ॐ ह्रीं श्री मल्लनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम

नैवेद्य ली सार, थाल सजा करके ।
रोग क्षुधा दो टार, नाथ कृपा करके ॥ मोह० ५

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोह कियो मो अंध, ज्ञान हटा करके।
चाहत काटन फंद, दीप जगा करके ॥ मोह० ६

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम्

अष्ट करम बलकार, पीछे लग करके।
नाथ सर्व दो टार, गंध दी मन करके ॥
मोह महा प्रभु मल्ल, जीतो बल करके।
करम पछारे दल्ल, आतम तप करके ॥ ७

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

मुक्त मिलन के काज, श्रीफल लेकर के।
जोड़ हस्त जिनराज, शर्ण तुम गह करके ॥ ८

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

अष्ट द्रव्य किये भेल, गायन गाकरके।
दिये चर्ण तुम मेल, ध्यान लगा करके ॥ मोह० ९

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

चौपाई—चैत सुदी एकम तब आई। अवधि ज्ञान चाले सुर राई ॥ गर्भ कल्याण कियो हरषित होई। धन्य प्रभु तुम सम नाहीं कोई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय चैत सुदी १ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

मंगसिर सुदि ग्यारस जिन जाये । मात पिता उर हरष वढ़ाये ॥ जन्म कल्याण देव सव आये । नृत्य गान कियो सुख वहु पाये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी ११ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्.

मंगसिर सुदि ग्यारस तव आई । जयंत पालकी देव उठाई । चले वैठ तामें तप धारी । वृक्ष अशोक तल केश उखारी ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी ११ तप मगल प्राप्ताय अर्घम नि०

पोष वदी दोयज दिन नीके । केवलज्ञान भयो जिन जीके ॥ लोकालोक विलोक जिनेशा । समवशरण तव कियो प्रवेशा ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय पोषवदी २ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम्.

फागुण शुकला पञ्चमी शुभ दिन । जगत त्याग वसे मुकत श्रीजिन ॥ इन्दर आन महोत्सव कीना । गाय वजाय हरष वहु लीना ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय फागुण सुदी ५ मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम्.

जयमाला

मोह महा रिपु दूर करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। काम बाण विध्वंस करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं॥ क्रोध अगनि के शान्त करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं॥ लोभ कूप के शुष्क करन को, जग में तुमसा० ॥१॥ जन्म जरा भय नाश करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। क्षुधा अग्नि दुख दूर करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं॥ आर्त रौद्र कुध्यान हरन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। धर्म शुक्ल शुभ ध्यान धरन को, जग में तुम० ॥२॥ जगत जाल से पार करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। जगत जीव प्रतिपाल करन को, जग० ॥ मुनिजन के उपसर्ग हरन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। भविजन के दुख दूर करन को, जग में०॥३॥ कर्म जनित अघ नाश करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं। शुद्धातम प्र-

काश करन को, जग में० ॥ "वाल" कर्म अघ नाश करन को, जग में तुमसा मल्ल नहीं । हटा चार गति मुक्ति करन को, जग में० ॥४॥

घत्ता—श्रीमल्ल जिनेशा त्रिभुवन ईशा, दीन ज्ञान प्रभु दया करो । फेर न जग आऊँ शिव पद पाऊँ, यह वर निज कर अता करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा

सोरठा—नमूँ नाथ जिन मल्ल, शीश धरूँ तुम चरण में । दूर करो सब शल्ल, पाऊँ आतम ज्ञान में ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीमुनिसुव्रतनाथ पूजा ।

अडिल्ल

मुनिसुव्रत जिन देव, करौं पद सेवजी ।
औगुण तजे समस्त, गुणान नहिं छेवजी ॥
अञ्जन गिर सम श्याम, धनुष तन बीसजी ।
भयो कुशाग्रपुर जनम, जगत के ईश जी ॥१

दोहा—पिता यशोमति नाथ तुम, वामादेवी मात ।
जिनके तुम से पुत्र हो, धन धन उन पितमात ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथाष्टक

मिल्यो जन्म जरा दुख ठौर ठौर । अब करो नाथ तुम गौर गौर ॥ क्षीरोदधि झारी बोर बोर । तुमरे चरनन दी ढोर ढोर ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

चन्दन केशर लिये घोर घोर । तुम पद चरचे कर जोर जोर ॥ जग ताप नशा प्रभु दौर दौर । अब धरूँ स्वाँग ना और और ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम

चाँवल सोधे कर गौर गौर । किये पुञ्ज चरन में ठौर ठौर ॥ पद अक्ष चाह ना और और । प्रभु दुख पाये मैं घोर घोर ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुतव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षतम्

काम सतायो क[illegible] [illegible]नोर [illegible] जग ठौर ठौर ॥

फागन वदि द्वादशि दिना, शिखर समेदा शीश।
खड़गासन रात्री समय, वरी मुक्ति जग ईश ॥५

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय फागुण वदी १२ मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम्

जयमाल

मुनिसुव्रत सुव्रत धार तुई। संसार पार आधार तुई॥ हे कर्म छार कुठार तुई। प्रभु जगत जनन हितकार तुई॥१॥ तो सम जगना एक तुई। हे अंध नशावन भान तुई॥ दीनन का दुख टार तुई। शिव वास बसावन हार तुई ॥२॥ अशरण शरणां नाथ तुई। अघ मैल निवारन हार तुई॥ अंध नेत्र दिये नाथ तुई। हे ज्ञान चक्षू दातार तुई ॥३॥ श्रीपाल दुःख टार तुई। हरी व्याधि कुष्ट जिनराज तुई॥ मैंना की पत राख तुई। जिन नाथ नमूँ दुख टार तुई ॥४॥ मोक्ष वास करतार तुई। अघ 'बाल' बिडारन हार तुई ॥५॥

घत्ता—जिन सुव्रत धारी जग आधारी, कर्म

नशावन हार तुम्हीं । शिवमग परकाशी तिमर विनाशी, भवदधि तारन हार तुम्हीं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—तुम पद पंकज नमन कर, धरूँ धरन में शीश । चाहत हूँ तुम पद प्रभु, करो नाथ बख़शीश ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीनमिनाथ पूजा ।

* छप्पै *

बिमला देवी माय, विजयरथ पिता तिहारा ।
मथुरापुरि भयो जन्म, आय हरि दरश निहारा ॥
कनक कमलपद चिन्ह, धनुष पंद्रह तुम काया ।
स्वर्ण समान तन वरण, नाम नमिनाथ कहाया ॥
पूजूं पद प्रभु तुम शरण आ, शोश चरण में टेक कर । हो दयावान कर कर दया, नाव जगत से पार कर ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम

अथाष्टक

कंचन झारी निर्मल नीर, चरनन ढोरी मेटन पीर। जरा नश जाय, कीजे दया नाथ जिन-राय॥ तुम पद पूजूं शरणे आय, जगत जाल प्रभु वेग नशाय। परम पद पाय, करूँ फेर ना जगत वसाय॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम

केशर संग कपूर घसाय, श्रीजिन चरनन दई चढ़ाय। जग ताप नशाय, कीजे दया नाथ जिनराय॥ परम०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप निवारनाय चन्दनम

तन्दुल अमल अखंडित लाय, तुम पद पुञ्ज धरे गुण गाय। अखैपद पाय, कीजे दया नाथ जिनराय॥ परम०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम

चम्पा चमेली मरवा डार, तिन पर भौंरा करत

गुंजार । काम विनशाय, कीजे दया नाथ जिन-
राय ॥ परम० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पम्

प्रभु नैवेद्य मैं स्वच्छ बनाय, मेली तुम ढिंग
जिनवर आय । छुधा दुख जाय, कीजे दया
नाथ जिनराय ॥ परम० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय छुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

मोह अंध बस नाना आरंभ, पालन कारण
किये कुटुम्भ । दीप ले आय, कीजे दया नाथ
जिनराय ॥ परम० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम्

करम शत्रु दल सनमुख आय, कर अनीत
भव भव दुखदाय । धूप महँकाय, कीजे दया
नाथ जिनराय ॥ परम० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

नाना सुन्दर फल जिनराज, भेट धरी फल
मोच्छ इलाज । चरन चित लाय, कीजे दया
नाथ जिनराय ॥ परम०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्

जल फल आदिक द्रव्य वसु लाय, श्री जिन चरनन भेट चढ़ाय। गान बहु गाय, कीजे दया नाथ जिनराय ॥ परम०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम नि०

पंचकल्याणक

वदी असौज दोयज जिन चन्दा। बसे गर्भ भयो परम अनन्दा॥ देव कुवेर रतनन कर वर्षा। कर कल्याण गर्भ गये अति हर्षा ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आसौज वदी २ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

साढ वदी दसमी जिनराई। जनमे हरि ऐरावत लाई॥ न्हा संग जिन पाँडुक जाई। कर प्रक्षाल सौंपे मा लाई ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आसाढ वदी १० जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम

साढ़ वदी दसमी तप धारा। उत्तर कुरु भये प्रभु असवारा॥ उठा पालकी चले हर्षाई। कर कल्याण सुर नर वजाई ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आसाढ वदी १० तप मंगल प्राप्ताय अर्घम नि०

मंगसिर सुदि ग्यारस को ज्ञाना । लोकालोक तुरत तब जाना ॥ मंगल केवल कियो सुर आई । निज निज ठाम गये गुण गाई ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर सुदी ११ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम् ।

बदि बैसाख चौदश प्रभाता । चढ़े नाथ गिर शिखर विख्याता ॥ पद्मासन शिव नार बिहाई । सहस्र संग लिये श्रीमुनिराई ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय बैसाख बदी १४ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

पद्धड़ीछंद—नमि नमत चरण सिर बार बार । अब विश्व भ्रमण दुख टार टार ॥ मैं धरी काय जिन बार बार । फिर मरण कियो दुख लह अपार ॥१॥ परो नरक कूप मिथ्या विचार । असि पत्र करी देह छार छार ॥ विकलत्रय पशु गति धार धार । छेदन भेदन ढो भार भार ॥२॥ मानुष गति त्रिसना लही लार । मन क्षोभ कपट अभिमान धार ॥ प्रभु देव गती में सुख

अपार । आयू पूरण फिर भव मझार ॥३॥
चारों गति हैं प्रभु दुख भंडार । भव वास बुरो
है जग असार ॥ तातें तुम चरनन प्रीति धार ।
पूजा विधि ठानी तुम अगार ॥४॥ भवसागर
से कर पार पार । चहै "बाल" इम कर पसार ॥

घत्तानंद—जिन जिन तुम ध्याया, पाप नशाया,
त्याग जगत शिव नार वरी । मैं तुम को भूला,
चक्र जग झूला, लई शरण कर महर खरी ॥

ॐह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा—नमि प्रभु के पद जुग करतल, नमन करूं
धर शीश । वर चाहूँ शिव ठाम को, नाथ करो
बख़्शीश ॥

अथाशीर्वादः

श्रीनेमिनाथ पूजा ।

छन्द

बाल ब्रह्म विवेकधारी, धनुष तन दस धारणम् ।
चरण कमठ मयूर धारक, हरिजन सुखकारणम् ।
शिवा माता गर्भ आये, जयन्त स्वर्ग बिसारणम् ।

विजयसमुद्र न्यायपालक, जन्म जिनगृह धारणाम् ।
तजी राजुल राज्य कन्या, पशुन प्रीति विचारणाम् ।
तजे बाहन चले पैदल, चढ़े गिर गिरनारणाम् ।
चतुर्दश गुणस्थान चढ़ कर, समोशरण सिंहासणाम ।
हने बसुविधि दर्श आदिक, जगत शीश सिधारणाम्

सोरठा—नेमिनाथ जिनराय, तुम पद धारण प्रीति धर । पूजूं तुमरे पाय, आह्वानन त्रय बार कर ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

अथाष्टक

क्षीरोदधि जल भर लाई । तुम चरनन दियो ढुराई ॥ जरा जन्म ताप दुखदाई । हरिये प्रभु होय सहाई ॥ श्रीनेमि जिनेश्वर राई । चरनन तुम प्रीत लगाई ॥ पूजत हूं तुम गुण गाई । देवो करम कलंक नशाई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

कर केशर की रगड़ाई। संग अगर कपूर मिलाई चाहत जग ताप नशाई। कर चरनन की चरचाई ॥ श्रीनेमि० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप निवारनाय चन्दनम्

तन्दुल अंजुल कर अमलाई। किये पुञ्ज चरण चित लाई ॥ मेटो भव भव भिरमाई । गति चार भ्रमण दुखदाई ॥ श्रीनेमि० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

रह्यो मोहि मदन सताई । सनमारग राह भुलाई ॥ कारन टारन निठुराई । पहुपादिक मेले आई ॥ श्रीनेमि० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्

यह क्षुधा महादुखदाई। ना टरती नाथ टराई। अब चरनन शरणे आई। नेवज बहु भेट चढाई ॥ श्रीनेमि० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम्

प्रभु मोह महातम छाई। आतम हित राह न पाई ॥ अब करो मोह विनशाई । कर दीपक

जोत जगाई ॥ श्रीनेमि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्

वसु विधि भव भँवर डुबाई । ताकी अति है गहराई ॥ कर पार समुद दुखदाई । धूपायन धूप जराई ॥ श्रीनेमि जिनेश्वर राई । चरनन तुम प्रीत लगाई ॥ पूजत हूँ तुम गुण गाई । देवो कर्म कलंक नशाई ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्

फल मोक्ष मिलन सुखदाई । नाना फल भेंट धराई ॥ अब जगत जाल कट जाई । कर महर अखै पद दाई ॥ श्रीनेमि० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

भव वास नशा दुखदाई । पद अनर्घ चहूँ सिर नाई ॥ लिये आठों द्रव्य मिलाई । पद मेले बहु गुण गाई ॥ श्रीनेमि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्

पञ्चकल्याणक

छंद—कातिक शुकल शुभ छट्ठ स्वामी । गरभ

मात पधारिया । देव आय चढ़ निजन वाहन, कर कल्याण सिधारिया ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय कातिक सुदी ६ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम्

श्रावण शुकल तिथि छट्ठ जनमें, शंख चरण चिन धारिया । ज्ञान तीन संग लिये आये, दोष अठारा टारिया ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण सुदी ६ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

जनम दिवस तप धार जिनवर, करन केश उखारिया । छदमस्त छप्पन दिन मुनीश्वर, राग द्वेष विसारिया ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण सुदी ६ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम ।

आसोज सुदि एकम मनोहर, ज्ञान केवल धारिया । गिरनार गिर प्रभात स्वामिन, घाति करम निवारिया ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय आसोज सुदी १ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम

आसाढ सप्तमि तिथि शुकल में, शेष करम

विडारिया। प्रभु खड़गासन धार निशि में, मोक्ष पति पद धारिया ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय असाढ सुदी ७ मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम

जयमाल

चौपाई—नेमिनाथ जगनाथ नमस्ते। भवदधि से गह हाथ नमस्ते। मुनि गणधर सिर ताज नमस्ते। बाल ब्रह्म आचार नमस्ते ॥१॥ मोक्ष कान्त वर नार नमस्ते। अनन्त चतुष्टय धार नमस्ते ॥ सकल ज्ञेय ज्ञाताय नमस्ते। निजानन्द रस पाय नमस्ते ॥ २ ॥ दीनन के दुख टार नमस्ते। भवदधि तारनहार नमस्ते ॥ अतिशय चौंतीस धार नमस्ते। दोष अठारा टार नमस्ते ॥३॥ कर्म शत्रुदल संहार नमस्ते। शान्त छवी ली धार नमस्ते ॥ लोकालोक निहार नमस्ते। विषम व्याधि विध टार नमस्ते ॥ ४॥ करो नाथ भव पार नमस्ते। "बाल" तुई आधार नमस्ते ॥५॥

घत्ता—बाल ब्रह्मचारी, पशू दुखारी, निरख शिखर गिरनार गये। राजुल सती त्यागी. भये विरागी, धार ध्यान वर मोक्ष भये ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा

दोहा—नेम जिनेश्वर तुम चरण, परत सकल अघ जाय। ताप नशावन सुख करन. लई शरण तुम आय ॥

इत्याशीर्वादः

श्रीपार्श्वनाथ पूजा।

छन्द

अश्वसेन के नन्द, मात है देवी वामाँ।
नगर बनारस जनम. काय नौ हस्तरु श्यामां।
बाल ब्रह्म आचार, धार नव भव तरुवर नल।
धरम शुकल शुभ धार. जीतकर वसु करम शत्रुदल।
जाय विराजे जग शिखर पर. नाश पास नारण तरण। प्रभु आह्वानन त्रय बार कर. पद पूजूं तारन मरण ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

अथाष्टक

लई झारी जल भर स्वच्छ, चरनन प्रक्षाल करी
हरो जनम जरा कर रक्ष, अरज कर जोर करी ॥
मैं दीन दुखी परमेश, बहुत आताप सही ।
प्रभु काटो करम कलेश, चरण पड़ शरण गही ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

केशर कापूर मिलाय, कंचन झारि भरी ।
ढोरी चरनन चित लाय, जान जग ताप हरी ॥
मैं दीन दुखी० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप रोग विनाशनाय चन्दनम

लिये अक्षत अमल अखंड, अखैपद पावन को ।
करो करम जाल का खंड, मोक्ष मग जावन को ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

प्रभु पुष्प नशावन काम, चरण तुम मेल दिये ।

अब हरो वेदना काम, चरण तुम शीश लिये ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पम्

घेवर फैनी गूंजादि, विनय कर थार भरे ।
हरो क्षुधा मेट प्रमाद, भ्रमण जग व्याधि टरे ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्

फँस मोह तिमर के जाल, परीजन प्रीत करी ।
ले निज कर दीपक बाल, नशावन भेट धरी ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्

वसु विधि दीने दुख घोर, भव भव अनीत करी ।
जारन कारन इन चोर, धूपायन धूप धरी ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपम्

जग भरमत बीता काल, शेष गति नाहिं रही ।
षट् ऋतु की भेट रसाल, मम पद शरण गही ॥
मैं दीन दुखी० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम्

जल फल आदिक कर मेल, यतन कर थार भरो ।
कर गान नृत्य दिये मेल, नाथ पद अनर्घ करो ॥
मैं दीन दुखी परमेश, बहुत आताप सही ।
प्रभु काटो करम कलेश, चरण पड़ शरण गही ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम्

पंचकल्याणक

दोहा—दोयज कृष्णा बैसाख की, आये गरभ जिनेश । अवधि जान बाणारसी, उत्सव कियो सुरेश ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय बैसाख बदी २ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

पौष श्याम एकादशी, नक्षत्र विशाखा जान ।
जन्मोत्सव हरि ने कियो, अश्वसेन घर आन ॥२

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष बदी ११ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्

पौष बदी ग्यारस दिना, धारो तप जिनराय ।
चढ़ विमलाभा पालकी, मनोरमा सें आय ॥ ३

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष वदी ११ तप मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

चैत श्याम तिथी चतुर्थी, केवलज्ञान प्रकाश।
समोशरण शोभा रची, चतुरनिकाय हुलास॥ ४

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र वदी ४ केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम ।

श्रावण शुकल की सप्तमी, गिर समेद के शीश।
खड़गासन त्यागा जगत, भये मोक्ष वर ईश॥ ५

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण सुदी ७ मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घम् नि०

जयमाला

चौपाई—जय जय जय जग जीव महंता। जय जय जय मय चार अनंता॥ जय जय मोक्ष नार के कंथा। जय जय जैन प्रचारक पंथा॥ १॥ जय जय नाग नागनी तारक। जय जय नाथ दया के धारक॥ जय जय कमठ मान के हरता। जय जय क्षमा भाव के धरता॥ २॥ जय जय नाथ गुणन भंडारी। जय जय अतुल बल निर्हंकारी॥ जय जय अठदस दोष विडा·

री। जय जय छियालीस गुणधारी ॥३॥ जय जय सिद्ध शिला भये नायक। जय जय सकल ज्ञेय प्रभु ज्ञायक॥ जय जय लोक अलोक निहारी। निरविकार जय निरआंकारी ॥४॥ जय जय तारन तरन जिनेशा। जय जय पूज्य नरेन्द्र सुरेशा॥ जय जय जय निज पद के दाता। गहि तुम शरण लहैं सुख साता ॥५॥ तुम परमातम सिद्ध निधाना। 'फंस मिथ्यात तुम्हें नहीं जाना। सेव कुदेव करी दिन राता। विषयन रोग सदैव नचाता ॥६॥ अब तुम शरण नाथ मैं आयो। तुमसे सतगुरु दर्शन पायो॥ तार तार अब ढील न कीजे। शरण गहे की बाँह गहीजे ॥७॥ गती चार से दे छुटकारा। पञ्चम गती कर वास हमारा॥ विनवे 'बाल' प्रभु बारम्बारा। करुणा धार नाव कर पारा ॥८॥

घत्ता—पारस जिनराई, कर्म नशाई, उपसर्ग

कमठ का सहन किया। तप तेग संभारी, छमा विचारी, क्रोध दुष्ट को वमन किया॥

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा—जिम पारसके परस तें, लोहा कंचन होय।
नाथ तिहारे नाम से, अधम पाप दे खोय॥

इत्याशीर्वाद.

श्रीमहावीर स्वामी पूजा

॥ छप्पै ॥

सिद्धारथ पितु नाथ. मात उर त्रिशला जाये।
कुंडलपुर भयो जन्म, दान वहु याचक पाये॥
कनक वरण तन हाथ, सात है पद जिनके हर।
सुरग वारवें चये, भये शिव रमणी के वर॥
वाल ब्रह्मचारी जिनेश तुम, आयु वर्ष सत्तर दो भई। सत तीन योगी नरेश छै, तीस मोक्ष तुम संग लई॥१॥

ॐह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्
ॐह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधी करणम् ॥

अथाष्टक

आसावरी

मैं भूलो नाथ सुध तेरो, गही शरण दया कर मेरी ॥ टेक

क्षीरोदधि जल उत्तम झारी, लामन प्रीति घनेरी।
जन्म जरा दुख नाशन कारन, ढोरो चरनन तेरी।
मैं भूलो नाथ सुध तेरी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलम्

अगर कपूर संग ले केशर, कंचन कलश भरोरी।
तप निवारन जग दुख टारन, चरनन लेप कि-यो री ॥ मैं भूलो० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप निवारनाय चन्दनम्

मुक्तासम लिये अमल अखंडित, तंदुल थार खरे री। अक्षयपद को पुञ्ज चरण में, हरषित आन करे री ॥ मैं भूलो० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतम्

बेला चम्पा गुलाब केतकी, महँकत महँक सु-
तेरी। काम वाण विध्वंस करन को, चरनन में
की ढेरी ॥ मैं भूलो० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पम

मोदक गूंजी कंचन थारी, क्षुधा नशावन मेरी।
चरनन मेली नृत्य गानकर, बहु विधि स्तुति
तेरी ॥ मैं भूलो० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम

मोह शत्रु वश भूल आपको, परमें प्रीत वखेरी।
कंचन दीप धरी तुम आगे, नाशो मोह अंधेरी॥
मैं भूलो नाथ० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपम

अष्ट करम दल पीछे लागे, सन्मारग रहे घेरी।
धूप दशानन धर धूपायन, गही शरण अब तेरी॥
मैं भूलो नाथ० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम

विश्व व्याधि दुखदाई भव भव, अरहट की सी

फेरी । मुक्त चहूँ मैं नाना फल ले, भेट करी जिन तेरी ॥ मैं भूलो नाथ सुध तेरी, गही शरण दया कर मेरी ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम्

जल फल आदिक आठ द्रव्य ले, बार बार इम टेरी । अर्घ भेंट कर तुम पद चाहूँ, नाथ करो मत देरो ॥ मैं भूलो० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घम् नि०

पंचकल्याणक

चौपाई—असाढ सुदी षष्ठी जिन नायक, आये गरभ सकल सुखदायक ॥ आय कुबेर करी पुर शोभा । रञ्च वेद जननी नहीं भोगा ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय आसाढ सुदी ६ गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घम्

चैत सुदी तेरस जिन जाये । कौतुक जनम करन हरि आये॥ पाँडुक जा अभिषेक करायो । लोचन सहस्र निरख सुख पायो ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय चैत सुदी १३ जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घम्।

मंगसिर वदि दसमी शुभ जाना। चन्द्राभा चढ़ गये वन ज्ञाना ॥ शालि तरु तल केश उखारे। हरि कर ले क्षीरोदधि डारे ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मगसिर वदी १० तप मंगल प्राप्ताय अर्घम।

सुदी वैसाख दसम को ज्ञाना। लोक अलोक सकल जिन जाना ॥ समोशरण अन्तरीक्ष विराजे। समय विहार धरम चक्र आगे ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय वैसाख सुदी १० केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घम

कातिक वदी मावस प्रभाता। मुक्ति नार वरी सुख की दाता ॥ चतुरनि काय देव पावापुर। मंगल मोक्ष कियो धार हर्ष उर ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय कातिक वदी मावस मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घम

जयमाल

चौपाई—श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश्वर। सकल

ज्ञेय ज्ञायक परमेश्वर ॥ धरम धुरा प्रभु धरम प्रचारी । मात पिता जग भये सुखारी ॥१॥ जननी नाथ शुभ स्वप्न निहारे । हरषित अंग पति जाय उचारे ॥ सोलह स्वप्न लखे इम भाँता । ऐरावत हाथी मद माता ॥२॥ केहरि बैल लक्ष्मी पुष्प माला । चाँद सूर्य्य घट कनक विशाला ॥ मीन जुगल सरवर मय कमला । सागर कल कलाट अति अमला ॥ ३ देव विमान गमन आकाशा । भवन धर्णेन्द्र जिनागम भाषा ॥ धूम रहित शिख अगनी ख़ासा । सिंहासन और रतनन रासा ॥४॥ सुनि पति पतनी आदर कीनो । हरषित दान याचकन दीनो ॥ पंच कल्याण किये तुम देवा । मैं भी आन करी पद सेवा ॥५॥ और चाह नहीं चक्री ताँई । रहै ध्यान तुम चरनन माँई ॥ ६ ॥

घत्ता—श्रीवीर जिनेशा, नमत सुरेशा, आय

चरणों में शरण गही। मम अरज सुनीजे, ढील न कीजे, नाव तार भव जात वही ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय महार्घ्यम् निर्वपामीति०

दोहा—"बाल" चरण में शीश ना, तुम गुण कीने गान। गती चार का नाश कर, पाऊँ पद निरवाण ॥

इत्याशीर्वादः

रचियता की प्रार्थना सर्व सज्जनों की सेवा में—

चौपाई

जम्बू दीप दीपन में आला। आरज खंड ता मध्य विशाला ॥ रजपूताना देश सुहाना। तामें शोभित अलवर थाना ॥१॥ वापी कूप तड़ागा शोभित। करें उद्यान सकल मन मोहित ॥ तहाँ अधीश्वर परम दयालु। श्रीतेजसिंह अति ही

कृपालु ॥२॥ न्याय परायण गुणन भंडारी । क्रोध शान्त कर दया मन धारी ॥ जिनके राम राज्य के माहीं । धर्म सेवन की बाधा नाहीं ॥३॥ इसी राज्य में दिल्ली सड़क पर । बसे रामगढ़ नगर मनोहर ॥ जिसमें उतंग शिखर जिन मन्दर । श्रीचन्द्रप्रभुजी बिराजत अन्दर ॥४॥ इस हीं नगर उत्तम भूमी में । जन्म दास भयो सकल खुशी में ॥ पल्लीवाल जैनी मम जाती । पिता सूर्य्यबख़्श भये विख्याती ॥५॥ नग्र निवासी साधर्मी भाई । जिन सतसंग धर्म प्रेम बढ़ाई ॥ वर्तमान समय थानेगाज़ी । क़ानूगो अरु समाजी ॥६॥ रची पूजा प्रभु स
मतिहीन काव्य चतुराई ॥
केवल । नातर नाहीं कछू
यही सकल जिन भाई ।
न लाई ॥ भई सम्पूरण
नुकूल श्रीजिन बचना

५ ६ ४ ८ (२४६६)

सि गुरु जानो । इन्द्री काय गति भोग पिछानो ॥ भक्ति वसाय गूंथी गुणमाला । ज्ञान हीन सेवक जिन "चाला" ॥६॥

* दोहा *

पाठक गण से प्रार्थना, क्षमा करो अपराद ।
सेवक है तुम चरण का, यह "चालाप्रसाद" ॥

समाप्त